गैरसैंण, सोमवार
21 जुलाई 2025
वर्ष: 17
अंक: 81 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com

स्थापित 1979

संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

दून अस्पताल में नौ दिन वेंटीलेटर पर रही किशोरी, डॉक्टरों ने दी नई जिंदगी

देहरादून। दून अस्पताल के बाल रोग विभाग में दिमागी बुखार से पीड़ित एक 13 वर्षीय किशोरी नौ दिन तक वेंटीलेटर पर रही। डॉक्टरों एवं नर्सिंग अफसरों की मेहनत से अब उसकी हालत में सुधार है और शनिवार को उसे डिस्चार्ज कर दिया गया।

एचओडी प्रो. डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि एन्सेफलाइटिस यानि दिमागी बुखार से पीडित 13 साल किशोरी अल्फ़िशा निवासी बिजनौर को 11 दिन पहले सहारनपुर मेडिकल कॉलेज से कोमा की हालत में वेंटीलेटर सपोर्ट पर रेफर किया गया था। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. तन्वी, डॉ. आयशा इमरान, डॉ. आस्था, डॉ. कुलदीप की टीम ने किशोरी का नौ दिन वेंटीलेटर सपोर्ट पर बेहतर इलाज किया और नर्सिंग अधिकारियों ने बेहतर देखभाल की। दो दिन उसे सामान्य वार्ड में रखकर मॉनीटरिंग की और शनिवार को डिस्चार्ज कर दिया गया। परिजनों ने डॉक्टरों का शुक्रिया अदा किया। दिमागी बुखार : ये लक्षण दिखे तो हो जाएं सतर्क पीडिया के एचओडी डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि दिमागी बुखार एक ऐसी स्थिति है, जिसमें दिमाग में सूजन होती है। यह वायरल संक्रमण, ऑटोइम्यून रोग, जीवाणु संक्रमण और कीड़े के काटने से हो सकता है। दिमागी बुखार से व्यक्ति लंबे समय तक दिक्कत में रह सकता है या उसकी जान जा सकती है।

प्रमुख लक्षण तेज बुखार के साथ तेज सिरदर्द, कमजोरी, थकान और जी मचलना है। इसके अलावा ध्यान एकत्रित करने में समस्या, मिर्गी, सुन्नपन, मांसपेशियों में कमजोरी, बोलने व सुनने में परेशानी, बेहोशी भी है।

गृहक्लेश में युवती ने निगला जहरीला पदार्थ, मौत

हरिद्वार। कटारपुर गांव में रविवार को घरेलू कलह से परेशान एक महिला ने जहरीला पदार्थ निगल लिया। परिजन उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच भी शुरू कर दी गई है। जानकारी के अनुसार, कटारपुर निवासी 25 वर्षीय स्वाति पत्नी अंकित का घरेलू विवाद को लेकर कुछ समय से तनाव चल रहा था। रविवार को स्वाति ने जहरीला पदार्थ खा लिया।

जब उसकी हालत बिगड़ने लगी तो परिजन उसे तत्काल हरिद्वार जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर पथरी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पुलिस के मुताबिक, स्वाति मूल रूप से नाथूखेड़ी, मंगलौर की रहने वाली थी और कुछ साल पहले उसकी शादी कटारपुर निवासी अंकित से हुई थी। बताया जा रहा है कि शादी के बाद से ही पति–पत्नी के बीच संबंध अच्छे नहीं थे और अक्सर विवाद होता रहता था। मृतका की एक बेटी भी है। एसओ पथरी मनोज नौटियाल ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि महिला ने गृहक्लेश के चलते जहरीला पदार्थ खाया। शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

वाहन दुर्घटना में चालक की मौत

उत्तरकाशी। डुंडा ब्लॉक के देवीधार–पटुड़ी मोटर मार्ग पर रविवार सुबह एक वाहन दुर्घटना ग्रस्त हो गया। इसमें वाहन चालक की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार रविवार सुबह 59 वर्षीय इन्द्रपाल सिंह परमार पुत्र शेर सिंह परमारन निवासी पैणी भवान वाहन लेकर भवान से देवीधार की ओर जा रहा था। इसी दौरान पैणी भवान व बैजकोट के बीच में वाहन अनियंत्रित हो गया और दुर्घटनाग्रस्त हो गया। वाहन में चालक के अतिरिक्त कोई भी सवार नहीं था।

सूचना के बाद स्थानीय ग्रामीण जब तक मौके पर पहुंचते और चालक को बाहर निकालते । इससे पूर्व चालक ने दम तोड़ दिया था। घटना की जानकारी मिलते ही राजस्व व पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा भर परिजनों को सौंप दिया। वहीं इस घटना पर क्षेत्रवासियों ने एवं वाहन चालकों ने गहरा दुःख प्रकट किया है।

मानसून सत्र से पहले सरकार ने बुलाई सर्वदलीय बैठक

संसद का मानसून सत्र आज

नई दिल्ली ,संसद का मानसून सत्र आज शुरू हो रहा है, जो 21 अगस्त तक चलेगा। उससे पहले सरकार ने आज सर्वदलीय बैठक बुलाई। इस मानसून सत्र में कुल 21 बैठकें होंगी। हालांकि, 12 अगस्त से 18 अगस्त के बीच स्वतंत्रता दिवस समारोहों के कारण सदन की कार्यवाही स्थगित रहेगी। इस सत्र में सरकार 7 लंबित विधेयकों पर विचार–विमर्श करेगी और 8 नए विधेयक पेश करने की तैयारी में है। सर्वदलीय बैठक में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू, शिरोमणि अकाली दल से हरसिमरत कौर, बीजेपी के अर्जुन राम मेघवाल, कांग्रेस से गौरव गगोई, अक्अउ्ड से थंबी दुई पहुंचे। वहीं, एनसीपी–एसपी से सुप्रिया सुले, शिवसेना से श्रीकांत शिंदे, उ्ड से टीआर बालू, आरजेडी से प्रेमचंद्र गुप्ता, जेडीयू से संजय झा, समाजवादी पार्टी से प्रोफेसर राम गोपाल यादव, कांग्रेस से प्रमोद तिवारी और के. सुरेश बैठक में पहुंचे। इसके अलावा सर्वदलीय बैठक में चंद्रशेखर

आजाद, अनुप्रिया पटेल, रामदास आठवले, तिरुचि शिवा सहित कई नेता पहुंचे।

पहलगाम मुद्दा महत्वपूर्ण: गौरव गोगोई

सर्वदलीय बैठक के बाद कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने कहा, "इस सत्र में हम जिन मुद्दों को महत्वपूर्ण मानते हैं, वे हैं पहलगाम। हमारी सीमाओं पर संघर्ष, विशेष रूप से देशों के एक साथ आने से दो मोर्चे बन रहे हैं। और साथ ही प्रत्येक नागरिक के मतदान का अधिकार और बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण से संबंधित चिंताएं। इन सभी मुद्दों पर, सरकार के मुखिया के रूप में प्रधानमंत्री का यह कर्तव्य और नैतिक जिम्मेदारी है कि वे संसद के गलियारों के माध्यम से राष्ट्र को संबोधित करें। मुझे उम्मीद है कि प्रधानमंत्री अपना नैतिक और नैतिक कर्तव्य निभाएंगे।"

संसद में पेश होने वाले प्रमुख विधेयक

इस मानसून सत्र में कई अहम विधेयक पेश किए जाएंगे, जो विभिन्न क्षेत्रों में अहम बदलाव ला सकते हैं। इनमें कुछ नए विधेयक और कुछ पुराने विधेयकों में संशोधन शामिल हैं।

इन मुद्दों की जारी रहेगी मांग: बीजद

बीजद सांसद सस्मित पात्रा ने कहा, "इस सत्र में, बीजू जनता दल ओडिशा को विशेष श्रेणी का दर्जा प्रदान करने, पोलावरम और महानदी विवादों के समाधान, कोयला रॉयल्टी संशोधन, ग्रीन टैक्स, तटीय राजमार्ग के निर्माण, राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास, नए एम्स अस्पतालों की स्थापना, रेलवे कनेक्टिविटी में सुधार, डिजिटल, बैंकिंग के साथ–साथ मोबाइल और किसानों के अलावा अन्य कनेक्टिविटी, एमएसपी को दोगुना करने आदि सहित आदिवासी विकास के विभिन्न मुद्दों की मांग जारी रखेगा।"

शादी का झांसा देकर 12 साल से करता रहा युवती से दुष्कर्म

काशीपुर। एक युवती ने सीएससी संचालक पर शादी का झांसा देकर 12 साल से दुष्कर्म करने व कई बार गर्भपात कराने का आरोप लगाया है। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने सीएससी संचालक उसकी पत्नी समेत पांच के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आईटीआई थाना क्षेत्र निवासी एक युवती ने न्यायालय में दिए प्रार्थना पत्र में कहा कि वह सिलाई–बुनाई कर अपना खर्चा चलाती है। खड़कपुर देवीपुरा निवासी सीएससी संचालक विनोद पुत्र रामपाल ने नौकरी देने के बहाने व सीएससी सेंटर से कुछ फार्म भरवाकर रुपये दिलाने का लालच दिया। आरोप है कि वह 12 साल से शादी का झांसा देकर उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाता रहा। इस बीच वह कई बार गर्भवती हुई तो आरोपी ने गर्भपात करवा दिया। करीब चार साल पहले विनोद ने चुपचाप एक युवती कामिनी से शादी कर ली। उसके बाद भी वह कामिनी से छिपकर उसके साथ संबंध बनाता रहा। जब उसे पता चला कि कामिनी के दो वर्ष की पुत्री हो गई तो उसने विनोद से शादी न करने पर जान देने और सुसाइट नोट में पति को मौत का जिम्मेदार बताकर लिखकर जाने की बात कही।

सीएम धामी ने किया हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी का स्वागत

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को मुख्यमंत्री आवास में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उन्हें चारधाम का प्रसाद एवं देवभूमि उत्तराखंड के अंब्रेला ब्रांड "हाउस ऑफ हिमालया" के स्थानीय उत्पाद भी भेंट किए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तथा हरियाणा के मुख्यमंत्री के मध्य दोनों राज्यों के हितों से संबंधित विभिन्न समसामयिक विषयों पर चर्चा हुई।

अवैध मतांतरण व विदेशी फंडिंग में बड़ा खुलासा

• ईडी को मिले चौंकाने वाले दस्तावेज

बलरामपुर ,अवैध मतांतरण और विदेशी फंडिंग के आरोपों में गिरफ्तार किए गए छांगुर उर्फ जलालुद्दीन, नीतू और नवीन से जुड़े मामलों की परत–दर–परत जांच में बड़े खुलासे हो रहे हैं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को हालिया छापेमारी में कई चौंकाने वाले दस्तावेज हाथ लगे हैं, जो इस गिरोह के काले कारनामों की पुष्टि करते हैं।

उतरौला नगर स्थित छांगुर के शोरूम से ईडी को हबीब बैंक एजी ज्यूरिख के एक खाते से जुड़े लेन–देन के दस्तावेज मिले हैं। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह खाता किसके नाम है और किस देश की शाखा से संबंधित है। विदित हो कि हबीब बैंक एजी ज्यूरिख की शाखाएं स्विट्ज़रलैंड समेत 11 देशों में हैं। ईडी को ऐसे कई साक्ष्य मिले हैं जो इस ओर इशारा करते हैं कि गिरोह के पास मौजूद धन अपराध की आय है। जांच में यह भी सामने आया है कि करोड़ों रुपये की अचल संपत्तियों की खरीद–फरोख्त और निर्माण गतिविधियों के लिए धन का हस्तांतरण किया गया है।

25 अहम दस्तावेज हुए जब्त

17 जुलाई को ईडी ने छांगुर और उसके सहयोगियों के 15 ठिकानों पर छापेमारी की थी। सुभाषनगर स्थित 'बाबा ताजुद्दीन आश्वी बुटीकझ् नामक शोरूम से करीब 25 महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद किए गए। इनमें से कई दस्तावेजों में जिन व्यक्तियों के नाम दर्ज हैं, उनके बारे में पूरी जानकारी केवल छांगुर या उसकी करीबी सहयोगी नीतू को ही है।

संदिग्ध लेन–देन और समझौते उजागर

जांच में मिले दस्तावेजों में नासिर वाडीलाल और छांगुर के बीच हुए समझौते, अपरिवर्तनीय पावर ऑफ अटॉर्नी, विभिन्न व्यक्तियों जैसे सफीउल्लाह, समीउल्लाह, प्रदीप बी. तिवारी और राजनारायण आर. सिंह के साथ हुए अनुबंध, और वाहन बिक्री से संबंधित अभिलेख शामिल हैं।

इसके अलावा 'यूनाइटेड मरीनझ् खाते से 'मेसर्स कृष्णा इंटरनेशनल एफजेडई

खाते में हुए लेन–देन के कागजात भी मिले हैं। 'रास अल खैमाहझ् सरकार की 'आरएके इन्वेस्टमेंट अथॉरिटी से संबंधित एक दस्तावेज में 'मिस आश्वी मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल, बलरामपुरझ् की संरचना संबंधी इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊकी परीक्षण रिपोर्ट भी संलग्न है।

संपत्तियों को दूसरों के नाम पर लिया

जांच में यह भी सामने आया है कि छांगुर ने मनी लॉन्ड्रिंग में अपनी संलिप्तता छुपाने के लिए अचल संपत्तियां सीधे अपने नाम पर नहीं लीं। इन संपत्तियों को उसके सहयोगियों नवीन रोहरा और नीतू रोहरा के नाम पर खरीदा गया, जिससे कि कानूनी कार्रवाई से बचा जा सके।

अस्पताल बनाने की थी योजना

मधपुर स्थित नीतू की कोठी का जो हिस्सा ढहाया गया, उसी परिसर में 'मिस आश्वी मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटलझ् बनाने की योजना थी। ईडी को मिली इंटीग्रल यूनिवर्सिटी की परीक्षण रिपोर्ट से इस बात की पुष्टि होती है।

ईडी फिलहाल सभी दस्तावेजों की गहराई से जांच कर रही है और छांगुर गिरोह के पूरे नेटवर्क तक पहुंचने की कोशिश में जुटी है।

अवैध प्लॉटिंग और सरकारी जमीनों पर हुए कब्जों को लेकर प्रशासन हुआ सख्त

विकासनगर। पछुवादून में अवैध प्लॉटिंग और सरकारी जमीनों पर हुए कब्जों को लेकर अब प्रशासन ने सख्त रुख अख्तियार करना शुरू कर दिया है। अवैध कब्जों की शिकायत पर प्रशासन का बुल्डोजर गरजने लगा है। यहां शीशमबाड़ा और ईस्ट होप टाउन में लंबे समय से ग्राम समाज की भूमि पर अवैध कब्जों की शिकायत मिल रही थी, जिस पर प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए अवैध प्लॉटिंग व अवैध कब्जों का ध्वस्त किया। पछुवादून में ग्राम समाज, नदी, नालों, पोखरों की जमीन पर लंबे समय से अवैध कब्जे किए जा रहे हैं। हालांकि प्रशासन की ओर से कभी कभार इन कब्जों के खिलाफ कार्रवाई की जाती रही है, बावजूद इसके अवैध कब्जों का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है। अब अवैध कब्जों के खिलाफ प्रशासन सख्त हो गया है। रविवार को तहसील प्रशासन की टीम ने शीशमबाड़ा और ईस्ट होप टाउन में बड़ी कार्रवाई करते हुए बीस से अधिक अवैध कब्जों का ध्वस्त किया।

कोई बाहरी ताकत हमें निर्देश नहीं दे सकती-उपराष्ट्रपति धनखड़

नई दिल्ली ,अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत–पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम (सीजफायर) कराने के बार–बार किए जा रहे दावों पर भारत ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने ट्रंप का नाम लिए बिना स्पष्ट और कड़े शब्दों में कहा कि दुनिया की कोई भी ताकत भारत को यह निर्देश नहीं दे सकती कि उसे अपने मामले कैसे संभालने हैं। उपराष्ट्रपति धनखड़ की यह टिप्पणी उस समय आई है, जब विपक्ष लगातार सरकार से अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के दावों पर स्पष्टीकरण की मांग कर रहा है। भारतीय रक्षा संपदा सेवा के प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा, "बाहरी नैरेटिव से निर्देशित न हों। इस देश में, एक संप्रभु राष्ट्र में, सभी निर्णय इसके नेतृत्व द्वारा लिए जाते हैं।" उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत को पता है कि उसे अपने मामलों को कैसे संभालना है। धनखड़ ने कहा, "भारत आपसी सहयोग से काम करता है, परस्पर सम्मान रखता है और अन्य देशों के साथ कूटनीतिक संवाद करता है। लेकिन अंततः हम संप्रभु हैं और हम अपने फैसले खुद लेते हैं।" उपराष्ट्रपति ने इस मुद्दे पर क्रिकेट की शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए एक दिलचस्प टिप्पणी की। उन्होंने कहा, "क्या इस बात पर माथापच्ची करने की जरूरत है कि किसने क्या कहा? जो क्रिकेट पिच पर अच्छे रन बनाता है, वह हमेशा खराब गेंदें छोड़ता है। वे गेंदें लुभाने वाली होती हैं, लेकिन उन पर शॉट लगाने की कोशिश नहीं की जाती। और जो कोशिश करते हैं, उनके लिए विकेटकीपर और गली में फील्डर तैयार रहते हैं।

पुरोला में घास काट रही महिला पर गुलदार का हमला

उत्तरकाशी। पुरोला ब्लॉक के कुमोला तोक स्थित जंगल में घास काटने गई एक महिला पर रविवार सुबह गुलदार ने हमला कर दिया। इससे महिला बुरी तरह घायल हो गई। सूचना के बाद मौके पर पहुंचे स्थानीय ग्रामीण उसे सीएचसी पुरोला लाए, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसकी हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों नेउसे हायर सेंटर रेफर कर दिया। वहीं गुलदार द्वारा महिला पर हमले के बाद से क्षेत्र के लोग दहशत में हैं। जानकारी के अनुसार पुरोला तहसील मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कुमोला के जेली डोखरी नामे तोक में पुजेली गांव निवासी उर्मिला देवी पत्नी चंद्र मोहन नौटियाल उम्र 38 वर्ष घास काटने जंगल गई थी। जहां घास काटते वक्त झाड़ियों के बीच में छिपे गुलदार ने महिला पर हमला कर उसे बुरी तरह घायल कर दिया। महिला की चिल्लाने की आवाज सुन आसपास सेब के बगीचों में काम रहे मजदूर और अन्य ग्रामीण मौके पर पहुंचे और उसे गुलदार के हमले से छुड़वाया, जिससे गुलदार भाग गया। ग्रामीणों ने तत्परता से घायल महिला को उपजिला चिकित्सालय पुरोला पहुंचाया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए चिकित्सकों ने हायर सेंटर देहरादून रेफर कर दिया है। वहीं दूसरी ओर सूचना के बाद वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची और गश्त शुरू कर दी है। उप वन संरक्षक डीपी बलूनी ने बताया कि रेंज अधिकारी अभिलाषा सक्सेना को महिला की स्थिति जानने चिकित्सालय भेजा गया है। साथ ही एसडीओ, रेंज अधिकारी समेत अन्य वन कर्मियों की टीम को घटनास्थल पर भेजकर लगातार निगरानी रखने और गश्त बढाने के निर्देश दिए गए हैं।

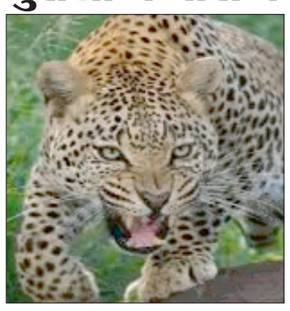

भेल में कार के पीछे दौड़ी मादा गुलदार

हरिद्वार। शनिवार देर रात भेल सेक्टर 4 स्थित केंद्रीय विद्यालय वाली सड़क पर एक मादा गुलदार अचानक कार के पीछे दौड़ पड़ी। कार के पीछे मादा गुलदार को देखकर चालक दहशत में आ गया। चालक ने तेजी से कार को दौड़ाकर अपनी जान बचाई। हरिद्वार वन प्रभाग की हरिद्वार रेंज के रेंजर शैलेंद्र सिंह रेगी ने बताया कि शनिवार देर रात करीब 10 बजे भेल के नगर प्रशासक संजय पंवार ने उन्हें फोन कर भेल क्षेत्र में मादा गुलदार होने की सूचना दी। नगर प्रशासक ने उन्हें बताया कि भेल सेक्टर 4 में केंद्रीय विद्यालय को जाने वाली सड़क पर एक मादा गुलदार कार के पीछे दौड़ पड़ी है। जिससे क्षेत्र में दहशत बनी हुई है। मादा गुलदार के साथ उसके दो छोटे बच्चे भी देखे गए हैं। रेंजर शैलेंद्र सिंह नेगी ने बताया कि सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंच गई थी। मादा गुलदार की उपस्थिति को लेकर लोगों को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं।

सेलाकुई में 38 हॉस्टल संचालकों पर 3 .80 लाख का जुर्माना

विकासनगर(। सेलाकुई पुलिस ने रविवार को थाना क्षेत्र में हॉस्टलों, होमस्टे और मकानों में रहने वाले किरायेदारों और छात्रों का सत्यापन अभियान चलाया।

इस दौरान 750 लोगों का सत्यापन किया गया। जबकि छात्रों, किरायेदारों का सत्यापन नहीं करने पर 38 हॉस्टल संचालकों और मकान मालिकों का कोर्ट चालान काटा गया। जबकि 32 लोगों को थाने में ले जाकर पूछताछ की गई थानाध्यक्ष सेलाकुई पीडी भट्ट ने बताया कि क्षेत्र में लगातार बाहरी व्यक्तियों, छात्रों आदि का लगातार सत्यापन अभियान चलाया जा रहा है। बताया कि रविवार को भी अलग–अलग टीमों का गठन कर क्षेत्र में स्थित हॉस्टलों व होम स्टे तथा मकानों में रहने वाले बाहरी छात्रों और किरायेदोरों का सत्यापन अभियान चलाया गया।

आज भारी बारिश का अलर्ट, कक्षा 1 से 12 तक के स्कूलों की छुट्टी

पौड़ी। उत्तराखंड के पौड़ी जिले में 21 जुलाई सोमवार को समस्त शासकीय, अर्द्धशासकीय व निजी विद्यालयों (कक्षा 1 से 12 तक) एवं समस्त आंगनबाड़ी केंद्रों में अवकाश रहेगा। डीएम स्वाति एस भदौरिया ने मौसम विभाग की चेतावनी के बाद जिले के स्कूल एवं आंगनबाड़ी केंद्रों में अवकाश घोषित किया है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग देहरादून ने 21 जुलाई को जनपद पौड़ी गढ़वाल में भारी से अति भारी वर्षा, तेज गर्जना, आकाशीय बिजली तथा 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से झोंकेदार हवाएं चलने की संभावना जताई है। इसके साथ ही नदियों, नालों और गधेरों में जलस्तर बढ़ने का भी अंदेशा जताया है। जिलाधिकारी स्वाति एस भदौरिया बारिश के अलर्ट को देखते हुए

जिले के समस्त शासकीय, अर्द्धशासकीय व निजी विद्यालयों (कक्षा 1 से 12 तक) एवं समस्त आंगनबाड़ी केंद्रों में 21 जुलाई सोमवार को एक दिवसीय अवकाश घोषित किया है। डीएम ने आपदा प्रबंधन तंत्र से जुड़े समस्त संबंधित विभागों को अलर्ट मोड में रहने के निर्देश दिए हैं।

उन्होंने जनता से ख़राब मौसम के दौरान अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें और किसी भी आपात स्थिति में प्रशासन से संपर्क कर हर घटना की सूचना सांझा करने की अपील की है।

डीएम भदौरिया ने विशेष रूप से संवेदनशील व आपदा संभावित क्षेत्रों में सतर्कता बरतने और जल स्त्रोतों के नजदीक न जाने की सलाह दी है। साथ ही उन्होंने मुख्य शिक्षा अधिकारी को सभी स्कूलों में अवकाश की सूचना समय पर उपलब्ध कराए जाने के निर्देश दिए हैं।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश : जांच में इलेक्ट्रिक फायर का खुलासा

उड़ान के 26 सेकंड बाद ही शुरू हो गई थी गड़बड़ी

नई दिल्ली ,गत 12 जून को अहमदाबाद में उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हुए एयर इंडिया के विमान 171 की जांच में एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। जांच टीम को बोइंग ड्रीमलाइनर विमान के पिछले हिस्से यानी पूंछ (टेल सेक्शन) में एक सीमित इलेक्ट्रिक आग के सबूत मिले हैं, जिससे यह आशंका गहरा गई है कि हादसे की वजह विमान की बिजली प्रणाली में आई कोई बड़ी खराबी हो सकती है। विमान का टेल सेक्शन मुख्य दुर्घटना और ईंधन विस्फोट में अपेक्षाकृत कम क्षतिग्रस्त हुआ था। जांच में इस हिस्से के कुछ इलेक्ट्रिक पार्ट्स में आग लगने के संकेत मिले हैं। अधिकारियों का मानना है कि यह आग उड़ान के दौरान लगी हो सकती है,

जो विमान की मुख्य बिजली आपूर्ति में गड़बड़ी की ओर इशारा करती है। टेल सेक्शन से बरामद सभी उपकरणों को आगे की जांच के लिए अहमदाबाद में सुरक्षित रखा गया है। जांच टीम को विमान का पिछला ब्लैक बॉक्स (फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर) बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल की छत से मिला था, लेकिन वह आग में इतनी बुरी तरह जल चुका था कि उससे डेटा निकालना संभव नहीं हो सका। हालांकि, 16 जून को मलबे से बरामद हुए आगे वाले ब्लैक बॉक्स से 49 घंटे की उड़ान जानकारी और क्रैश से ठीक पहले की दो घंटे की ऑडियो रिकॉर्डिंग सफलतापूर्वक निकाल ली गई है। जांच में यह भी पता चला है कि हादसे वाली उड़ान से ठीक पहले, दिल्ली से अहमदाबाद आई फ्लाइट के दौरान विमान के स्टेबलाइजर पोजीशन ट्रांसड्यूसर में खराबी दर्ज की गई थी। यह पुर्जा विमान के टेल सेक्शन में ही स्थित होता है। हालांकि, अहमदाबाद में मेंटेनेंस टीम ने इसे ठीक करने का दावा किया था, लेकिन अब यह जांच के केंद्र में है। इस थ्योरी को हादसे में एकमात्र जीवित बचे यात्री विश्वाशकुमार रमेश के बयान से भी बल मिलता है, जिन्होंने बताया था कि टेक–ऑफ के बाद केबिन की लाइटें बार–बार बंद हो रही थीं। विमान का सहायक पावर यूनिट , जो टेल सेक्शन में ही होता है, सुरक्षित पाया गया है। डेटा से पता चला है कि हादसे के समय अपने आप ऑटो–स्टार्ट मोड में सक्रिय हो गया था, जो इस बात का एक और मजबूत संकेत है कि विमान की मुख्य बिजली प्रणाली फेल हो गई थी और दोनों इंजनों को ईंधन की आपूर्ति कुछ ही सेकंड में बंद हो गई थी।

कांवड़ियों ने युवक से की मारपीट, वीडियो वायरल

हरिद्वार। सावन की कांवड़ यात्रा के दौरान हरिद्वार के शंकराचार्य चौक पर कांवड़ियों द्वारा एक युवक से मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। बताया जा रहा है कि युवक का कांवड़ियों से किसी बात पर विवाद हो गया, जिसके बाद कुछ कांवड़ियों ने सरेआम उसकी पिटाई कर दी। घटना शंकराचार्य चौक के पास की है। यहां एक युवक और कांवड़ियों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। देखते ही देखते बात इतनी बढ़ गई कि कांवड़ यात्रा में शामिल कुछ लोगों ने युवक को घेरकर मारपीट शुरू कर दी। राहगीरों ने जब बीच–बचाव की कोशिश की तो कांवड़िए और उग्र हो गए। इस पूरी घटना का वीडियो पास ही खड़े कुछ लोगों ने मोबाइल से बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

पटना से बंगाल तक पीछा...

चंदन मिश्रा हत्याकांड का मुख्य आरोपी बादशाह कोलकाता से गिरफ्तार

पटना ,राजधानी पटना के राजा बाजार स्थित पारस एचएमआरआई अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में घुसकर चंदन मिश्रा की गोली मारकर हत्या करने के मामले में मुख्य आरोपी तौसीफ रजा उर्फ बादशाह को गिरफ्तार कर लिया गया है। बिहार एसटीएफ और बंगाल एसटीएफ की एक संयुक्त टीम ने देर रात उसे कोलकाता के आनंदपुर इलाके से दबोच लिया।

इस बड़ी कार्रवाई में तौसीफ के साथ एक महिला, सचिन सिंह, यूनुस खान और हरीश सिंह को भी हिरासत में लिया गया है। जानकारी के मुताबिक, गिरफ्तारी के दौरान एक आरोपी घायल भी हुआ है। सूत्रों ने बताया कि तौसीफ को एक गेस्ट हाउस से गिरफ्तार किया गया और उसके पास से वह

कार भी बरामद कर ली गई है, जिसमें वह फरार होता दिखा था। हालांकि, बिहार पुलिस ने अभी तक आधिकारिक तौर पर किसी भी गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं की है। एसटीएफ को अपनी तकनीकी जांच में पहले ही पता चल गया था कि तौसीफ पश्चिम बंगाल में छिपा हुआ है। इसके बाद से ही बिहार एसटीएफ और पटना पुलिस की टीमें लगातार वहां छापेमारी कर रही थीं।

सम्पादकीय

अंधविश्वास में झुलसती मानवता

वही क्षण था जब चंद्रयान–3 ने चांद की सतह पर भारत का झंडा स्थापित कर विज्ञान की नई उंचाइयों को छू लिया, लेकिन उसी समय भारत के ही एक गांव में कुछ लोगों ने एक परिवार के पांच सदस्यों को 'डायनइ कह कर जिंदा जला दिया। ये दो घटनाएं किसी कल्पना की उपज नहीं, बल्कि हमारे समय और समाज की दो परस्पर विरोधी सच्चाइयों का आईना हैं। एक ओर अंतरिक्ष में विजय तो दूसरी ओर अंधविास की भी में झुलसती मानवता। बिहार के पूर्णिया जिले के टेटगामा गांव में तीन महिलाओं और दो पुरु षों को 'डायनइ बता कर पीटा गया और पेट्रोल छिड़क कर जिंदा जला दिया गया। इस अमानवीय कृत्य में लगभग 150 लोगों की भीड़ शामिल थी। यह केवल हत्या नहीं, बल्कि उस तार्किक चेतना की हार थी जो हमारी संस्कृति और संविधान, दोनों में प्रतिष्ठित है। यह घटना एक गांव या राज्य की समस्या नहीं, उस सोच का परिणाम है जहां विज्ञान का दीपक जलाए बिना ही हम आधुनिक बनने का भ्रम पालते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 2000 से 2016 तक बिहार में 2,500 से अधिक डायन–हत्या की घटनाएं हो चुकी हैं। यह आंकड़ा केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि सवाल है कि हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं? क्या तकनीक की प्रगति का लाभ चंद महानगरों और उच्च वर्ग तक ही सीमित रहेगा? क्या गांवों तक वैज्ञानिक सोच, संवेदनशीलता और मानवाधिकारों की चेतना पहुंची है? या फिर आधुनिकता मोबाइल और इंटरनेट की सुविधा तक ही सिमट गई है? यह घटना न केवल मानवाधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि संविधान और कानून की विफलता भी है। जब पूरा गांव एक अमानवीय कृत्य में शामिल हो, और पुलिस–प्रशासन निष्क्रिय बना रहे, तो सवाल उठता है कि लोकतंत्र के स्तंभ क्या चुनावों और भाषणों तक सीमित रह गए हैं? पुलिस की निष्क्रियता और प्रशासन की उदासीनता इस पूरे तंत्र पर गहरी चोट है, जो दिखाती है कि संवैधानिक ढांचे के भीतर भी बहुत सी दरारें हैं, जिन्हें भरने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की नहीं, पूरे समाज की है। हमारे पूर्वजों की परंपरा में तर्क, विज्ञान और विवेक का बहुत महत्त्व था। आर्यभट्ट, वराहमिहिर, चरक, सुश्रुत जैसे नाम केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि भारतीय बौद्धिक परंपरा की नींव थे। लेकिन क्या आज उनके विचारों की छाया हमारे गांव–कस्बों तक पहुंची है? किसी महिला के बीमार हो जाने पर भी उसका इलाज अस्पताल में कराने की बजाय उसे डायन कह कर जलाया जाता है, तो इसका मतलब है कि हमारा समाज अतीत के किसी अंधेरे कुएं में जा गिरा है। मीडिया की भूमिका भी इस पूरे विमर्श में संदिग्ध है। आज की मीडिया सिर्फ सनसनी पर केंद्रत है। घटना की संवेदनशीलता को समझने के बजाय वे इसे टीआरपी की दौड़ में बदल देते हैं। क्या कोई समाचार संस्था बताती है कि इस तरह की घटनाएं क्यों हो रही हैं? क्या वे समाज को इस ओर मोड़ने का प्रयास कर रहे हैं कि अंधविास, अज्ञानता और पाखंड का समूल नाश हो? नहीं। वे केवल क्लिप बनाते हैं, भावनाएं भड़काते हैं, पर कोई वैचारिक आंदोलन नहीं चलाते। ऐसी घटनाओं में भीड़तंत्र को तो जिम्मेदार ठहराया ही जाना चाहिए लेकिन उससे भी अधिक जिम्मेदार हैं वे संस्थाएं जो समाज को दिशा देने के लिए बनी हैं–शिक्षा संस्थान, धार्मिक संगठन, पंचायतें और प्रशासनिक तंत्र। अगर इन सबकी चुप्पी किसी एक क्रिया को संभव बनाती है, तो वह केवल सह–अपराध नहीं, बल्कि मानसिक अपराध भी है। टीवी चैनल केवल सास–बहू के ड्रामे दिखाने की बजाय 'डायन प्रथा खत्म करोइ जैसे अभियान को प्राथमिकता दें। पंचायतों में हर महीने तर्क आधारित संवाद हों। स्कूलों में छात्रों को परीक्षा की तैयारी नहीं, सामाजिक चेतना का पाठ भी पढ़ाया जाए। सनातन परंपरा का मूल तत्व ही है करु णा, विवेक और ज्ञान। यदि समाज में धर्म के नाम पर ही हिंसा होती है, तो वह धर्म नहीं, अधर्म है।

आतंकी गतिविधियों में डिजिटल तकनीकी का उपयोग चिंतजनक

ललित गर्ग

टेरर फंडिंग पर नजर रखने वाली वैश्विक संस्था वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) की नई रिपोर्ट में आतंकी गतिविधियों में डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग पर चिंता जताई गई है।

रिपोर्ट ने वैश्विक सुरक्षा के समक्ष एक नई और गहन चुनौती की ओर संकेत करते हुए आतंकी गतिविधियों में डिजिटल तकनीकों के बढ़ते प्रयोग को घोर चिंतजनक बताया है।

रिपोर्ट में ई–कॉमर्स, ऑनलाइन भुगतान, सोशल मीडिया, क्रिप्टोकरेंसी और डार्कनेट जैसे प्लेटफामी के माध्यम से आतंकी गतिविधियों के वित्त पोषण और संचालन के बढ़ते खतरे पर न केवल प्रकाश डाला गया है, बल्कि गंभीर चिंता भी जताई गई है। रिपोर्ट ने आतंकवाद के एक अलग ही पहलू की ओर ध्यान खींचा है। इसमें बताया गया है कि टेक्नॉलजी तक आतंकी संगठनों की आसान पहुंच उन्हें और खतरनाक बना रही है।

इससे निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर नई रणनीति की जरूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान जैसे देशों में पोषित आतंकी संगठन इन तकनीकों का उपयोग कर न केवल फंडिंग जुटा रहे हैं, बल्कि गोपनीयता और पहुंच के नये मार्ग भी तलाश रहे हैं। अब आतंकी संगठन विकेंद्रीकृत मॉडल की ओर भी बढ़ रहे हैं, जैसेकि अल–कायदा क्षेत्रीय इकाइयों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर धन जुटाना, संचालन करना।

भारत ने समय–समय पर पाकिस्तान पोषित आतंकवाद को बेनकाब करते हुए दुनिया से मिल रहे आर्थिक सहयोग पर चिंता जताई और कठोर कार्रवाई की मांग की, इस रिपोर्ट को भारत के रुख का समर्थन करने वाला महत्त्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। एफएटीएफ के मुताबिक, 2019 में पुलवामा और 2022 में गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में आतंकी हमलों के लिए ऑनलाइन प्लैटफॉर्म का इस्तेमाल किया गया। पुलवामा में आतंकियों ने आईईडी का इस्तेमाल किया था और इसे बनाने के लिए एल्युमिनियम पाउडर एमेजन से खरीदा गया था। गोरखपुर में हमले में पैसों के लेन देन में ऑनलाइन जरिया अपनाया गया। गोरखपुर वाले केस में आतंकी विचारधारा से प्रभावित शख्स ने इंटरनैशनल थंड पार्टी ट्रांजैक्शन और वीपीएन सर्विस का उपयोग किया था। इस तरह से उसने आईएसआईएल के समर्थन में विदेश में धन भेजा था और उसे भी बाहर से आर्थिक मदद मिली थी।

वीपीएन डिजिटल तकनीक है जो इंटरनेट उपयोगकर्ता की लोकेशन और पहचान छुपाती है। 2024 तक दुनिया में 150 करोड़ से अधिक वीपीएन यूजर्स थे।

इनमें से बड़ी संख्या एशिया और मध्य पूर्व से है, जहां सेंसरशिप या निगरानी से बचने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। भारत में 12 से 14 करोड़ वीपीएन उपयोगकर्ता हैं। भारत वीपीएन यूजर्स की संख्या में दुनिया के शीर्ष 3 देशों में शामिल है। वीपीएन का उपयोग कर आतंकी सोशल मीडिया और गुप्त चैनलों के जरिए युवाओं को बरगलाने और भर्ती करने का काम करते हैं। कुछ आतंकवादी समूह वीपीएन नेटवर्क का प्रयोग कर सरकारी वेबसाइटों, रक्षा प्रतिष्ठानों और बैंकिंग सिस्टम पर साइबर हमले करते हैं।

दुनिया की एक तिहाई आबादी ऑनलाइन शॉपिंग करती है। इस साल ग्लोबल ई–कॉमर्स मार्केट के 7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाने की उम्मीद है। भारत इस लिस्ट में फिलहाल सातवें नंबर पर है लेकिन सवाल है कि इस डेटा के बीच अगर कुछ संदिग्ध लोग कुछ हजार डॉलर की खरीददारी करते हैं, जिसका इस्तेमाल आगे जाकर किसी आतंकी हमले में होता है, तो उसे चिह्नित कैसे किया जाए? एफएटीएफ ने कुछ दिनों पहले पहलगाम को लेकर कहा था कि इतना बड़ा आतंकी हमला बाहरी आर्थिक मदद के बिना संभव नहीं हो सकता। उसकी हालिया रिपोर्ट इसी बात को और पुष्ट कर देती है। आतंकियों ने अपने काम का तरीका बदल लिया है। वे इंटरनेट की दुनिया की ओट ले रहे हैं, जो ज्यादा खतरनाक है।

एफएटीएफ की रिपोर्ट में कहा गया है कि आतंकवादी समूहों ने पारंपरिक धन स्रेतों के साथ क्रिप्टोकरेंसी जैसे डिजिटल वित्तीय माध्यमों का भी उपयोग कर रहे हैं। पाकिस्तान एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट से बाहर भले हो गया हो लेकिन उसके खिलाफ आरोपों में कोई कमी नहीं आई है। अनेक ग्लोबल इंटेलिजेंस रिपोर्ट्स और एफएटीएफ ऑब्जर्वेशंस इस बात की पुष्टि करती हैं कि पाकिस्तान में आतंकी गुटों को डिजिटल इकोसिस्टम का खुले तौर पर उपयोग करने दिया जा रहा है, या कभी–कभी सरकार की मौन सहमति से। उदाहरण के रूप में लश्कर–ए–तैयबा और जैश–ए–मोहम्मद जैसे संगठनों ने बिटकॉइन और अन्य डिजिटल टोकन के जरिए फंड जुटाने की नई तरकीबें अपनाई हैं।

कई मामलों में आतंकी फंडिंग के लिए फर्जी चैरिटेबल ट्रस्ट और सामाजिक मीडिया अभियानों का सहारा लिया गया है। 'गजवा–ए–हिंदइ जैसे डिजिटल प्रोपेगेंडा प्लेटफॉर्म्स पाकिस्तानी जमीन से संचालित होकर भारत में कट्टरपंथ को बढ़ावा देने में लगे हैं। डिजिटल तकनीक ने जहां मानव जीवन को सरल और तेज किया है, वहीं इसका दुरुपयोग करके आतंकवाद को नया चेहरा देने की कोशिशें चिंता का विषय है। एफएटीएफ फएटीएफ की चेतावनी को गंभीरता से लेने और वैश्विक सहयोग को मजबूत करने की जरूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान जैसे देशों पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाना होगा ताकि वे अपनी धरती पर पनप रहे आतंकवाद एवं डिजिटल आतंकवाद के अड्डों को समाप्त करें। तभी एक सुरक्षित डिजिटल वि और शांतिपूर्ण वैश्विक समाज की कल्पना की जा सकती है।एफएटीएफ रिपोर्ट विश्लेषण करती है कि आतंकवादियों ने अपने उद्देश्यों के लिए वैश्विक दर्शकों से धन जुटाने के लिए सोशल मीडिया पर धन उगाहने वाले प्लेटफॉर्म और क्राउडफंडिंग से आतंकवाद के वित्त पोषण प्राप्त किया है। आतंकी संगठन पारंपरिक तरीकों के साथ डिजिटल तरीकों से भी धन जुटाकर आतंक को अंजाम दे रहे हैं। भारत ने एफएटीएफ रिपोर्ट को अपने रुख के समर्थन में महत्त्वपूर्ण कदम बताया है, जिसमें पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों पर कार्रवाई की मांग की गई है। यह रिपोर्ट आतंकवाद के वित्त पोषण और संचालन में शामिल देशों और व्यक्तियों पर दबाव बढ़ाने और आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए नीतियों और रणनीतियों को विकसित करने में सहायक हो सकती है।

गरीबी से पार पाने में खासी सफलता मिली

भारत में अत्यधिक गरीबी दर 2011–12 में 27.1 प्रतिशत से एक दशक में तेजी से घट कर 2022–23 में 5.3 प्रतिशत रह गई। यह जानकारी विश्व बैंक की एक रिपोर्ट से मिली है। हालांकि विश्व बैंक ने अपनी गरीबी रेखा की सीमा को संशोधित करके तीन डॉलर प्रति दिन कर दिया है। बेशक, यह रिपोर्ट हौसला देती है। खासकर मौजूदा वैश्विक के मद्देनजर किसी भी देश के लिए इस प्रकार का आकलन खासा उत्साहवर्धक होता है। भारत विकासशील देश है, और अपनी आयोजना में शुरू से से ही गरीबी उन्मूलन का प्राथमिकता देता रहा है। गरीबी से अपने लोगों को उबारने के लिए पंचवर्षीय योजनाएं शुरू की गई ताकि आम जन के आर्थिक हालात बेहतर से बेहतर हो सकें। सत्तर के दशक में 'गरीबी हटाओइ का नारा देकर चुनाव तक लड़ा गया। जीता भी गया। बेशक, सरकार की तमाम प्राथमिकताओं और चिंताओं के केंद्र में गरीबी उन्मूलन रहा है। इसके नतीजे भी अच्छे मिले, लेकिन कुछ समस्याएं बराबर बनी रहीं जिनके चलते गरीबी उन्मूलन का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सका। एक तो यह हुआ की आर्थिक विकास के लाभ कुछ वगी तक ही सीमित रह गए। इसके चलते आर्थिक असमानता की समस्या उभरी जिससे पार पाने के लिए आज जूझना पड़ रहा है, लेकिन यह भी सच है कि गरीबी से पार पाने में खासी सफलता मिली है। इस बात की ताकीद शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल जैसे मानकों में देश के बेहतर प्रदर्शन से होती है। गरीबी कम करने में हम कमजोर नहीं पड़े हैं। और अब तो विश्व बैंक भी इसकी तस्दीक कर रहा है। विश्व बैंक ने अप्रैल में भारत पर अपने 'गरीबी और समानता संक्षिप्तइ में कहा था कि अत्यधिक गरीबी (प्रति दिन 2.15 डॉलर से कम पर जीवन यापन) 2011–12 में 16.2 प्रतिशत से घट क 2022–23 में 2.3 प्रतिशत हो गई जिससे 17.1 करोड़ लोग इस रेखा से ऊपर आ गए। बेशक, गरीबी उन्मूलन के प्रयास आजाद भारत के किसी भी कालखंड में शिथिल नहीं पड़ने पाए हैं, लेकिन बहुत कुछ वैश्विक हालात पर निर्भर करता है। वैश्विक जोखिम आज कहीं ज्यादा नकारात्मक हैं। अमेरिका जैसे देशों में नीतिगत बदलाव, कई देशों में युद्ध के हालात ने वैश्विक परिदृश्य को तनावपूर्ण बना दिया है। लेकिन अर्थव्यवस्था के बुनियादी कारक इतने मजबूत हैं कि भारत अपने लोगों के हालात बेहतर करने में जरूर सफल होगा।

मोटर वाहन एग्रीगेटर दिशा निर्देश

अजय टम्टा

पिछले कुछ सालों में लाखों ड्राइवर ऐप–आधारित टैक्सी सेवाओं से जुड़े हैं। क्योंकि इसमें उन्हें काम करने की आजादी, अनुकलता और तकनीकी सुविधा मिलती है। हालाँकि बढ़ते कमीशन, अस्पष्ट नीतियों, मनमाने निलंबन और सुरक्षा के अभाव ने इस वादे को कई लोगों के लिए निराशा में बदल दिया। भारत भर में तीन मिलियन से अधिक गिग ड्राइवरों द्वारा अनुभव की गई इन चुनौतियों ने व्यापक और लागू करने योग्य विनियमन की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया।

इसके जवाब में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और नितिन गडकरी के मार्गदर्शन में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) ने पहले ही मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के अंतर्गत मोटर वाहन एग्रीगेटर दिशानिर्देश, 2020 जारी किये थे। इन दिशानिर्देशों ने राज्य सरकारों को एग्रीगेटर्स को लाइसेंस देने और उनकी निगरानी करने का अधिकार देते हुए एक नियामक ढाँचा प्रदान किया, जिससे वाहन–परिचालन उद्योग के विकास को बढ़ावा मिला। ड्राइवरों और यात्रियों दोनों के लिए सुरक्षा, निष्पक्षता और जवाबदेही से जुड़ी चिंताओं को देखते हुए, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने अब मोटर वाहन एग्रीगेटर दिशानिर्देश, 2025 पेश किया है। यह भारत के डिजिटल मोबिलिटी इकोसिस्टम में संरचना, सुरक्षा और समावेशिता लाने के लिए एक प्रमुख नीतिगत अपडेट है। मोटर वाहन अधिनियम 1988 के कानूनी आधार पर निर्मित इन दिशानिर्देशों का उद्देश्य ओला, उबर, रैपिडो जैसे ऐप–आधारित कैब एग्रीगेटर्स के संचालन को विनियमित करना है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि दिशानिर्देश संवैधानिक कार्यादेशों और न्यायिक निर्देशों के अनुरूप ड्राइवरों और यात्रियों दोनों को संतुलित लाभ प्रदान करने का प्रयास करते हैं। 2025 के दिशानिर्देशों का सबसे उल्लेखनीय पहलू है– ड्राइवरों के हितों की सुरक्षा। अब तक एग्रीगेटर प्लेटफॉर्म से जुड़े ड्राइवर, अक्सर खुद को कम कमाई, मनमाने ढंग से कार्य से हटाना (ऑफ–बोर्डिंग), बीमा का न होना और अपर्याप्त कानूनी उपायों के साथ अनिश्चित परिस्थितियों के बीच काम करते थे। नए नियम दिशानिर्देश इन प्रणालीगत कमियों को दूर करने का प्रयास करते हैं। दिशानिर्देशों में एग्रीगेटर्स को राज्यों द्वारा अधिसूचित मूल किराए के आधार पर प्रति घंटे या न्यूनतम गारंटीकृत आय सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इसमें यह भी अनिवार्य किया गया है कि एग्रीगेटर और ड्राइवर के बीच किराया निपटान, आपसी सहमति से दैनिक, साप्ताहिक या पाक्षिक आधार पर किया जाना चाहिए। इस कदम से हजारों ड्राइवरों को खासकर आय–प्राप्ति वाले समय में, आय में होने वाले उतार–चढ़ाव से निजात मिलने की उम्मीद है। इसके अलावा, सरकार ने अब प्रत्येक एग्रीगेटर को कम से कम 5 लाख रूपये का स्वास्थ्य बीमा और 10 लाख रूपये का सावधि बीमा प्रदान करना अनिवार्य कर दिया है। उम्मीद है कि ये सुरक्षा उपाय गिग श्रमिकों को औपचारिक श्रम संरचनाओं के दायरे में लायेंगे।

इसके अलावा, नए दिशानिर्देश कमीशन में पारदर्शिता लाते हैं तथा एग्रीगेटर के हिस्से को अधिकांश मामलों में प्रत्येक किराए के 20त्न तक सीमित करते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है, कि ड्राइवर अपनी आय का एक उचित हिस्सा रख सकेंगे। एग्रीगेटर्स को भुगतान कटौती, किराया विभाजन और जुर्माने के बारे में स्पष्ट और विस्तृत जानकारी भी प्रदान करनी होगी। दिशानिर्देशों में कहा गया है कि प्रत्येक एग्रीगेटर एक औपचारिक शिकायत निवारण प्रणाली की स्थापना करेगा, जहाँ यात्रा रद्दीकरण, भुगतान विवाद या निलंबन जैसे मुद्दों का समयबद्ध और पारदर्शी तरीके से समाधान हो सके। ड्राइवरों को समय– समय पर प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, जिसमें ऐप उपयोग, आपातकालीन प्रतिक्रिया, सड़क सुरक्षा, यातायात नियम, लैंगिक संवेदनशीलता, दिव्यांगजन जागरूकता, ग्राहक से बातचीत, डिजिटल साक्षरता आदि विषयों पर आधारित 40 घंटे का प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल होगा, ताकि वे भविष्य के यातायात से जुड़ी चुनौतियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो सकें।

यात्रियों के लिए भी ये दिशानिर्देश समान रूप से परिवर्तनकारी हैं। यात्रा सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और किराए में हेरफेर से जुड़ी चिंताओं को ध्यान में रखते हुए नए दिशानिर्देश सुरक्षा उपाय लेकर आए हैं, जिनकी बहुत आवश्यकता थी।

एग्रीगेटर प्लेटफ़ॉर्म पर सभी ड्राइवरों को अनिवार्य पुलिस सत्यापन, स्वास्थ्य जांच और व्यवहार प्रशिक्षण से गुजरना होगा। इसके अलावा, प्रत्येक वाहन में इन ऐप आपातकालीन बटन, जीपीएस–आधारित निगरानी और यात्राओं को साझा करने की सुविधाएँ होनी चाहिए, जो सभी यात्रियों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को बढ़ाती हैं। राज्य की निगरानी में एग्रीगेटर्स द्वारा एक 24&7 नियंत्रण कक्ष और हेल्पलाइन प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए। यात्रियों के लिए एक और बड़ा लाभ किरायों और विशेष परिस्थितियों में किराये में वृद्धि (सर्ज प्राइसिंग) का नियमन है। दिशानिर्देशों में स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित की गई हैं: राज्य की नीति के आधार पर किराए में वृद्धि की सीमा आधार किराए के 1.5 से 2 गुना तक सीमित की गयी है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उच्च माँग के समय यात्रियों का शोषण न हो। इसके अलावा, प्लेटफ़ॉर्म को किराए का विवरण पारदर्शी रूप से प्रदर्शित करना आवश्यक है, जिसमें आधार किराया, गतिशील शुल्क, एग्रीगेटर का हिस्सा और सरकारी कर शामिल हैं। महत्वपूर्ण रूप से, दिशानिर्देश उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता का भी ध्यान रखते हैं। एग्रीगेटर्स को भारत–स्थित सर्वरों पर उपयोगकर्ता डेटा का संग्रह करने और डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम सहित डेटा सुरक्षा रूपरेखा का पालन करने का निर्देश दिया गया है, ताकि डेटा का दुरुपयोग या लीक न होना सुनिश्चित हो सके और भारत की संप्रभु डेटा नीतियों के अनुसार इसे सुरक्षित रखा जा सके।

राजकुमार राव की मालिक का बॉक्स ऑफिस पर हाल–बेहाल

अभिनेता राजकुमार राव की फिल्म मालिक को सिनेमाघरों में रिलीज हुए एक सप्ताह पूरा हो गया है। 11 जुलाई को रिलीज हुई इस गैंगस्टर ड्रामा फिल्म से निर्माताओं को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन दर्शकों ने इसे सिरे से नकार दिया है। पहले दिन से ही यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर दर्शकों के लिए तरसती नजर आ रही है। हर गुजरते दिन के साथ फिल्म का कारोबार घटता जा रहा है। आइए जानें मालिक ने सातवें दिन कितने करोड़ रुपये कमाए।

बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, मालिक ने अपनी रिलीज के सातवें दिन यानी पहले गुरुवार को 1.29 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 21.14 करोड़ रुपये हो गया है।

मालिक के निर्देशन की कमान पुलकित ने संभाली है, वहीं फिल्म का निर्माण कुमार तौरानी ने टिप्स फिल्म्स के बैनर तले किया जा रहा है। इस फिल्म में मानुषी छिल्लर, प्रोसेनजीत चटर्जी, हुमा कुरैशी और सौरभ शुक्ला जैसे कलाकार भी नजर आ रहे हैं।

बॉक्स ऑफिस पर मालिक का सामना विक्रांत मैसी की आंखों की गुस्ताखियां और अनुराग बसु की मेट्रो... इन दिनों से हो रहा है। हालांकि, इन दोनों ही फिल्मों का बॉक्स ऑफिस पर हाल–बेहाल है।

द ग्रेट इंडियन कपिल शो 3 में दिखेंगे सन ऑफ सरदार 2 के सितारे, प्रोमो आउट

कॉमेडियन कपिल शर्मा के कॉमेडी शो द ग्रेट इंडियन कपिल शो का तीसरा सीजन पहले दिन से ही दर्शकों का खूब मनोरंजन कर रहा है। इस शो के नए एपिसोड का दर्शक बड़ी ही बेसब्री से इंतजार करते हैं। अब द ग्रेट इंडियन कपिल शो 3 का नया प्रोमो वीडियो सामने आ गया है, जिसमें अजय देवगन की फिल्म सन ऑफ सरदार 2 की स्टार कास्ट नजर आ रही है। आइए जानें आप यह एपिसोड कब और कहां देख पाएंगे। द ग्रेट इंडियन कपिल शो 3 के नए प्रोमो में अजय के अलावा मृणाल ठाकुर और रवि किशन की भी झलक दिख रही है। पूरी स्टार कास्ट कपिल के साथ मस्ती करती दिख रही है। द ग्रेट इंडियन कपिल शो 3 के इस एपिसोड को आप 19 जुलाई, 2025 को रात 8 बजे ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर देख सकते हैं।

आकाशदीप और अर्शदीप सिंह के बैकअप के रूप में टीम इंडिया में जुड़े अंशुल कंबोज

नई दिल्ली,भारत और इंग्लैंड की टीमें 23 जुलाई से मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड में एंडरसन–तेंदुलकर ट्रॉफी का चौथा टेस्ट मैच खेलने वाली है. इस टेस्ट मैच से पहले भारतीय क्रिकेट टीम को 2 बड़े झटके लगे हैं. टीम इंडिया के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह और आकाशदीप दोनों चौथे टेस्ट मैच से पहले चोटिल हो गए हैं. उनकी जगह पर टीम में नए गेंदबाज को शामिल किया गया है.

रिपोर्ट के अनुसार, टीम इंडिया में तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज को आकाशदीप और अर्शदीप सिंह के कवर के तौर पर इंग्लैंड में शामिल किया गया है. आकाश और अर्शदीप दोनों ही 23 जुलाई से होने वाले चौथे टेस्ट मैच के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हैं. अब ऐसे में उनकी जगह पर अंशुल कंबोज को टीम में जगह मिल गई है. आपको बता दें कि आकाशदीप कमर में दर्द से जूझ रहे हैं. उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ बर्मिंघम और लॉर्ड्स यानी दूसरा और तीसरा टेस्ट मैच खेला था. उनके अलावा बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप ने अभी सीरीज में एक भी मैच नहीं खेला है. वो अपने टेस्ट डेब्यू का इंतजार कर रहे थे लेकिन उनके हाथ में चोट लग गई है. रिपोर्ट्स के मुताबिक आकाशदीप की चौथे टेस्ट मैच में उपलब्धता पर अभी कोई स्पष्टता नहीं है, जबकि अर्शदीप के मैनचेस्टर टेस्ट के लिए चयन के लिए उपलब्ध होने की संभावना नहीं है. ऐसे में भारतीय चयनकर्ताओं ने अंशुल कंबोज को टीम में इन दोनों के बैकअप के तौर पर जोड़ा है. गुरुवार को बेकेनहैम में नेट सेशन के दौरान अर्शदीप के बाएं हाथ में चोट लग गई. इसके बाद उनके हाथ में पट्टी बंधी हुई देखी गई.

भारतीय क्रिकेट टीम के सहायक कोच रयान टेन डोएशेट ने कहा था कि, हम अपने कॉम्बिनेशन पर फैसला अर्शदीप की स्थिति को देखते हुए लेंगे.

पूजा भट्ट ने किया पॉडकास्ट शो द पूजा भट्ट शो का ऐलान

बॉलीवुड की जानी–मानी अभिनेत्री, निर्देशक और फिल्म निर्माता पूजा भट्ट ने अपने पहले पॉडकास्ट शो का ऐलान कर दिया है, जिसका नाम द पूजा भट्ट शो है। इस शो को आईहार्टपॉडकास्ट और मैमथ मीडिया एशिया के सहयोग से तैयार किया जा रहा है। पूजा का पॉडकास्ट शो द पूजा भट्ट शो इस साल सितंबर के आखिरी सप्ताह से आईहार्टपॉडकास्ट नामक इंटरनेट रेडियो प्लेटफॉर्म पर प्रसारित होगा, जिसमें हर हफ्ते एक नया एपिसोड रिलीज किया जाएगा। पूजा इस शो के माध्यम से पॉडकास्टिंग की दुनिया में अपना पहला कदम रख रही हैं। इस शो में वह न सिर्फ अपनी निजी और पेशेवर जिंदगी के अनुभवों और उतार–चढ़ाव को साझा करेंगी, बल्कि मनोरंजन जगत

से जुड़ी कई अनसुनी और दिलचस्प कहानियों को भी दर्शकों के सामने लाने वाली हैं। बता दें कि पूजा ने 1989 में आई फिल्म डैडी से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी, जिसका निर्देशन उनके पिता महेश भट्ट ने किया था। भट्ट ने कहा, मैं आईहार्टमीडिया के साथ साझेदारी कर द पूजा भट्ट शो लॉन्च करने को लेकर बहुत खुश हूं।

भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में कई प्रेरणादायक कहानियां हैं। मैं इस शो के जरिए उन लोगों पर प्रकाश डालना चाहती हूं जो हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने में मदद कर रहे हैं। अभिनेताओं से लेकर निर्देशकों तक, संगीतकारों से लेकर निर्माताओं और स्टाइलिस्टों तक...मैं अपनी जर्नी के उतार–चढ़ाव और लोगों की कहानियों को साझा करने को इच्छुक हूं, ये वो लोग हैं जिन्होंने मुझे प्रेरित किया।

भारतीय फिल्म, संगीत और संस्कृति का असर पूरी दुनिया में तेजी से फैल रहा है।

वेस्टइंडीज बनाम ऑस्ट्रेलिया: पहले टी–20 में जेक फेजर–मैक्गर्क को मिलाा मौका

नईदिल्ली,ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के हरफनमौला खिलाड़ी मैट शॉर्ट वेस्टइंडीज के खिलाफ पहला टी–20 नही खेलेंगे। अभ्यास सत्र के दौरान उन्हें तिरछी मांसपेशियों में खिंचाव हुआ, जिसके बाद वे इलाज के लिए घर लौट गए। उनकी जगह जेक फेजर–मैक्गर्क पारी की शुरुआत करेंगे, जो स्पेंसर जॉनसन के हटने के बाद देर से टीम में शामिल हुए थे। किंग्स्टन में 21 जुलाई (भारतीय समयानुसार) को पहला मुकाबला होगा। ऑस्ट्रेलियाई टीम प्रबंधन ने अपनी अंतिम एकादश की घोषणा कर दी है। वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी–20 मैच के लिए ऑस्ट्रेलिया की टीम: मिचेल मार्श (कप्तान), जेक फ्रेजर–मैक्गर्क, जोश इंगलिस (विकेटकीपर), कैमरून ग्रीन, ग्लेन मैक्सवेल, मिच ओवेन, कूपर कोनोली, बेन ड्वार्शिस, सीन एबॉट, नाथन एलिस और एडम जैम्पा। मिच ओवेन तय योजना के अनुसार मध्यक्रम में खेलते हुए नजर आएंगे।

भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाला मैच हुआ रद्द, डब्ल्यूसीएल ने प्रशंसकों से मांगी माफी

नईदिल्ली, भारत और पाकिस्तान के बीच वर्ल्ड चैम्पियनशिप ऑफ लीजेंड्स (डब्ल्यूसीएल) का बहुप्रतीक्षित मुकाबला रद्द कर दिया गया है। यह फैसला तब लिया गया जब शिखर धवन, हरभजन सिंह, इरफान पठान और सुरेश रैना सहित कई भारतीय खिलाड़ियों ने इस मैच से अपना नाम वापस ले लिया।

बताया जा रहा है कि अप्रैल में हुए पहलगाम आतंकी हमले के बाद खिलाड़ियों के इस कदम का असर पड़ा। यह मैच 20 जुलाई को बर्मिंघम के एजबेस्टन में खेला जाना था। डब्ल्यूसीएल ने भारत–पाकिस्तान मुकाबला शेड्यूल करने से हुई भावनात्मक पीड़ा पर माफी मांगी है। आयोजकों ने कहा कि हाल में दोनों देशों के बीच हुई मित्रतापूर्ण वालीबॉल सीरीज के बाद प्रशंसकों के लिए खुशहाल यादें बनाने की सोच से यह मैच तय किया गया था। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि यह निर्णय अनजाने में भावनाओं को ठेस पहुंचा गया और कई भारतीय दिग्गजों के लिए असहज स्थिति पैदा कर दी।

एक नजर

जंगल में भटके कावडियों को सुरक्षित निकाला

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ीः नीलकंठ कांवड़ यात्रा में मंदिर से वापस आते समय एक 33 कावड़ियों का ग्रुप देर रात को जंगल में भटक गया। पुलिस टीम ने सूचना मिलते ही रेस्क्यू अभियान चलाकर स्थानीय लोगों की मदद से घने जंगल में रास्ता भटके सभी कांवडियो को सुरक्षित रेस्क्यू किया। एसएसपी पौड़ी लोकेश्वर सिंह ने बताया कि नीलकंठ कांवड़ यात्रा में हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश से आए कांवड़ियों का दल पुंडराशू गांव के पास में अंधेरे में शार्टकट रास्ते से जाने के चक्कर में रास्ता भटक गया। कांवडियों का दल पांच किमी दूर घने जंगल में चले गए। जंगल में मोबाइल नेटवर्क के सिग्नल नामात्र होने के चलते उनका किसी से संपंकई भी नहीं हो पा रहा था। पुलिस टीम को सूचना मिलते ही पुलिस टीम द्वारा रात्रि में ही रेस्क्यू अभियान चलाया। बताया कि पुलिस टीम स्थानीय लोगों की मदद से घने जंगल में रास्ता भटके सभी 33 कांवडियों को सुरक्षित रेस्क्यू कर सभी को सकुशल घने जंगल से बाहर मुख्य् मार्ग पर निकाला गया। पुलिस टीम में निरीक्षक विनोद कुमार, उपनिरीक्षक राजाराम डोभाल, विनोद चपराना, स्थानीय निवासी शिव सिंह, नरेश सिंह आदि शामिल रहे।

श्रीनगर शहर में में घरेलू गैस का संकट

श्रीनगर गढ़वाल। घरेलू गैस सिलेंडरों की आपूर्ति सुचारु न होने से श्रीनगर और आसपास के क्षेत्रों में उपभोक्ता परेशान हैं। आनलाइन बुकिंग के बावजूद उपभोक्ताओं को समय पर सिलेंडर नहीं मिल पा रहे हैं। नगर सहित आसपास के क्षेत्रों में जहां हर दूसरे दिन गैस वाहन पहुंचता था, वहां अब तीन–चार दिन बाद भी सिलेंडर नहीं पहुंच पा रहे हैं, जिससे रोजमर्रा का जीवन प्रभावित हो रहा है। दरअसल, नगर क्षेत्र में प्रतिदिन औसतन 250 से 300 घरेलू सिलेंडरों की खपत है, लेकिन मौजूदा समय में पर्याप्त सिलेंडर नहीं पहुंचने से समस्या गंभीर हो गई है। जुलाई के पहले सप्ताह से सिलेंडर आपूर्ति में यह व्यवधान बना हुआ है। श्रीनगर में प्रतिदिन एक ट्रक सिलेंडर पहुंचता था, अब दो–तीन दिन में ही ट्रक आ रहा है, जिससे सिलेंडरों की आपूर्ति उपभोक्ताओं तक पूरी कर पाना गैस एजेंसियों के लिये मुसीबत बन गया है।घरेलू गैस की समस्या से नौकरीपेशा और छात्र–छात्राओं पर ज्यादा असर पड़ रहा है।स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि अतिशीघ्र गैस आपूर्ति को सामान्य कराया जाए ताकि आमजन को राहत मिल सके। श्रीनगर गैस सर्विस, गढ़वाल मंडल विकास निगम लिमिटेड के प्रबंधक दीपक कुमार ने बताया कि गैस आपूर्ति बाधित होने की मुख्य वजह हरिद्वार स्थित बहादराबाद गैस प्लांट से कम मात्रा में सिलेंडरों के वाहन आना है। इस प्लांट से ही पर्वतीय क्षेत्रों में रसोई गैस की आपूर्ति होती है।

ऑपरेशन कालनेमि के तहत तीन फर्जी बाबा हिरासत में

श्रीनगर गढ़वाल। धर्म की आड़ में ठगी करने वाले पाखंडी बाबाओं के खिलाफ श्रीनगर पुलिस ने आपरेशन "कालनेमि" के तहत कार्रवाई करते हुए तीन फर्जी साधुओं को पुलिस ने हिरासत में लिया है। पुलिस तीनों आरोपियों से आपराधिक इतिहास और ठगी के तौर–तरीकों की जानकारी जुटा रही है। पुलिस का कहना है कि धर्म का चोला पहनकर ठगी करने वालों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पौड़ी के निर्देशन में जनपदभर में आपरेशन कालनेमि चलाया जा रहा है। क्षेत्राधिकारी श्रीनगर अनुज कुमार ने बताया कि अभियान के तहत साधु का वेश धारण कर भ्रमण कर रहे तीन व्यक्तियों को अलग–अलग स्थानों से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान 26 वर्षीय मनीष, 35 वर्षीय सुरेशनाथ, 38 वर्षीय बच्चूलाल यादव के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि तीनों व्यक्तियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है और उनके आपराधिक रिकार्ड खंगाले जा रहे हैं।

पीजी प्रवेश परीक्षा उत्तर कुंजी जारी

श्रीनगर गढ़वाल। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2025–26 के लिए पीजी प्रवेश परीक्षा की उत्तर कुंजी जारी कर दी है। जिन अभ्यर्थियों को उत्तर कुंजी में किसी प्रश्न के उत्तर को लेकर आपत्ति है, वे 21 जुलाई 2025 सांय 5 बजे तक विश्वविद्यालय को अपनी आपत्ति भेज सकते हैं।

कुलसचिव कार्यालय द्वारा जारी सूचना के अनुसार, अभ्यर्थियों को अपनी आपत्ति संबंधित प्रश्न का उल्लेख करते हुए उचित साक्ष्यों सहित विश्वविद्यालय की आधिकारिक ईमेल आईडी पर भेजनी होगी। विश्वविद्यालय ने स्पष्ट किया है कि निर्धारित तिथि और समय के बाद प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

लाखों खर्च कर लगाई फेंसिंग, गांव पहुंच रहे जानवर

दुगड्डा ब्लॉक के भट्ट गांव व जयगांव में लगाई गई थी फेंसिंग लाइन

वर्ष–2019 में करीब 65 लाख रुपये की लागत से बिछाई गई थी लाइन

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः सरकारी बजट का किस तरह दुरुपयोग किया जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण दुगड्डा ब्लाक के अंतर्गत भट्ट गांव व जयगांव में देखने को मिल रहा है। जहां 65 लाख रुपये की लागत से बिछाई गई फेंसिंग लाइन छह वर्ष भी नहीं टिक पाई। नतीजा, आज भी जंगली जानवर आबादी में पहुंचकर ग्रामीणों को फसल को चट कर रहे हैं। खेती बर्बाद होने से ग्रामीण पलायन को मजबूर हो रहे हैं। जबकि, ग्रामीण कई बार सरकारी सिस्टम से गांव के आसपास सुरक्षा दीवार बनाने की मांग उठा चुके हैं।

वर्ष-2019 में भट्ट गांव व जय गांव में 65 लाख रुपये की लागत से साढ़े छह किलोमीटर के क्षेत्र में फेसिंग लाइन लगाई गई थी। लेकिन, वर्तमान में यह फेंसिंग लाइन पूरी तरह टूट चुकी है। नतीजा, गांव के आसपास के जंगल से आए दिन जंगली जानवर आबादी में प्रवेश कर रहे हैं। ग्रामीण मुकेश भट्ट ने बताया कि आज से दस वर्ष पूर्व गांव में करीब डेढ़ सौ से अधिक परिवार रहते थे।

यह पूरा क्षेत्र खेती के लिए पहचाना जाता था। लेकिन, वर्तमान में जंगली जानवरों के आतंक से ग्रामीण खेती छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। बताया कि क्षतिग्रस्त फेंसिंग लाइन को ठीक करवाने के लिए कई बार वन विभाग को शिकायत कर चुके हैं। लेकिन आज तक कोई भी अधिकारी या कर्मचारी मौके पर झांकने तक नहीं पहुंचा। जबकि, होता तो यह चाहिए था कि समय–समय पर फेंसिंग लाइन का निरीक्षण कर इसकी देखरेख की जाती।

पलायन बनी मजबूरी

भट्ट गांव व जयगांव के ग्रामीणों की आर्थिकी खेती पर ही टिकी हुई थी। लेकिन, जंगली जानवर आए दिन उनकी खेती को नुकसान पहुंचा देते हैं। नतीजा, मेहनत के बाद भी फल नहीं मिलने से परेशान ग्रामीणों ने खेती से मुंह मोड़ लिया है। ऐसे में वह रोजगार के लिए गांव से पलायन को भी मजबूर हो रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि पिछले पांच वर्षों में बीस से अधिक परिवार गांव से पलायन कर चुके हैं। ग्रामीणों ने वन विभाग से फेंसिंग लाइन की मरम्मत करवाकर व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने की मांग की है।

हरेला के महत्व के बारे में दी जानकारी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः कोटद्वार नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत जशोधरपुर स्थित महादेव सरस्वती शिशु विद्या मंदिर हाईस्कूल में हरेला सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य निर्मल केमनी ने किया। कला प्रतियोगिता प्राथमिक वर्ग में भौमिक प्रथम, अंशुमन ढौंडियाल द्वितीय व प्राची तृतीय रही। जूनियर वर्ग में रौनक प्रथम, आरूष हल्दिया द्वितीय व आस्था रावत तृतीय रहे। माध्यमिक वर्ग में कृष्णा चौहान प्रथम, भूमि द्वितीय व प्रिया तृतीय रहे। निबंध प्रतियोगिता के प्राथमिक वर्ग में वैभव कुमार प्रथम, धानी द्वितीय वंशिका तृतीय रहे। जूनियर वर्ग में रितिका रावत प्रथम, हंसिका द्वितीय व आयुशी नैथानी तृतीय रहे। माध्यमिक वर्ग में तनिष्का रावत प्रथम, अनामिका द्वितीय व निधि नैथानी तृतीय रहे।

जर्नलिज्म एंड मॉस कम्युनिकेशन पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रारंभ

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः डॉक्टर पीतांबर दत्त बर्थवाल हिमालयन राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रोजगार परक जर्नलिज्म एंड मॉस कम्युनिकेशन पाठ्यक्रम में सत्र 2025–26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय, नई टिहरी ने इस पाठ्यक्रम को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए इस सत्र में इसमें आमूल चूल परिवर्तन किए हैं। विभाग प्रभारी डा. प्रीति रानी ने बताया कि इस चार वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना तथा छोड़ना अब छात्र-छात्राओं के ऊपर निर्भर करेगा। यदि कोई छात्र-छात्रा प्रथम वर्ष में निर्धारित क्रेडिट लेकर पास हो जाता है और उसके बाद वह इस पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहता है तो उसे अंडरग्रेजुएट जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन सर्टिफिकेट दे दिया जाएगा। यदि कोई छात्र दो वर्ष के बाद इस पाठ्यक्रम को निर्धारित अंकों के साथ उत्तीर्ण करके छोड़ना चाहता है तो उसे डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन सर्टिफिकेट दिया जाएगा। यदि कोई छात्र तीन वर्षों में निर्धारित अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण करता है और इस पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहता है तो उसे बी ए डिग्री इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। लेकिन यदि कोई छात्र लगातार चार वर्षों तक इस पाठ्यक्रम में इनरोल रहता है तो उस दशा में निर्धारित क्रेडिट प्राप्त करने पर उस छात्र को बी ए (आनर्स) जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन की डिग्री प्रदान की जाएगी।

बताया कि छात्र हित में विश्वविद्यालय ने यह व्यवस्था भी बनाई है कि कोई छात्र-छात्रा स्नातक तथा स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद भी इस व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहता है तो वह ले सकता है। गैप ईयर की बाध्यता भी समाप्त कर दी गई है

शिविर में बंदियों को दी जानकारी

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ीः नेल्सन मंडेला अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर जिला कारागार में विधिक जागरुकता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान बंदियों को विभिन्न जानकारियां दी गई। शिविर में प्राधिकरण की सचिव एवं सिविल जज नाज़शि कलीम ने बंदियों को नेल्सन मंडेला के संघर्षमय जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। साथ ही उन्हें संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों, न्यायिक सहायता के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। बंदियों को उनके विधिक अधिकारों की जानकारी देने के साथ–साथ यह भी बताया गया कि वह निशुल्क विधिक सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

शिविर में स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से बंदियों के लिए स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें कारागार में निरुद्ध बंदियों की स्वास्थ्य जांच की गई। कार्यक्रम में सभी ने नेल्सन मंडेला के विचारों को आत्मसात करते हुए समाज में न्याय, मानवता और समानता की स्थापना के लिए कार्य करने की शपथ ली। कार्यक्रम में प्रभारी अधीक्षक जिला कारागार डीपी सिन्हा, पैनल अधिवक्ता अतुल पोखरियाल, असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल विनोद कुमार, रिटेनर अधिवक्ता कुसुम नेगी, चिकित्सा अधिकारी डा. श्वेता नवानी आदि शामिल रहे।

पंचायत चुनाव में प्रत्याशियों ने तेज किया चुनाव प्रचार

जयन्त प्रतिनिधि।पौड़ीः पंचायत चुनाव में प्रत्याशियों ने चुनाव प्रचार तेज कर दिया है। प्रत्याशी घर–घर जाकर मतदाताओं से अपने पक्ष में मतदान करने की अपील कर रहे हैं। पौड़ी में पंचायत चुनाव में लैसडौन विधायक दिलीप रावत की पत्नी नीतू रावत, पूर्व शिक्षा मंत्री नरेंद्र सिंह भंडारी के पुत्र दीपेंद्र भंडारी, निवर्तमान ब्लाक प्रमुख संगठन के अध्यक्ष महेंद्र राणा, निवर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष शांति देवी, निवर्तमान जिला पंचायत उपाध्यक्ष रचना बुटोला जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ रहे हैं।

इन दिनों भाजपा, कांग्रेस के साथ ही निर्दलीय प्रत्याशी घर—घर जाकर मतदाताओं को अपने पक्ष में रिझाने में जुटे हुए है। रविवार को निवर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष शांति देवी ने सीली मल्ली के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर वोट मांगे। नीतू रावत ने जयहरी, रचना बुटोला व दीपेंद्र भंडारी ने धौलकंडी क्षेत्रों में जाकर भ्रमण किया।

सामान्य ज्ञान में हंसिका थपलियाल रही अव्वल

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ीः गढ़ज्योति सांस्कृतिक कला मंच द्वारा रामलीला मैदान में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में जूनियर और सीनियर वर्ग में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। रामलीला मैदान में आयोजित के जूनियर वर्ग में सेंट जेम्स स्कूल की हंसिका थपलियाल ने पहला, भगत राम मॉर्डन स्कूल की सृष्टि रावत व सेंट जेम्स स्कूल की श्रेष्ठा राणा ने संयुक्त रूप से दूसरा, सेंट जेम्स स्कूल की अदिति रुडोला ने तीसरा स्थान हासिल किया। सीनियर वर्ग में भगत राम मॉर्डन स्कूल की शिखर ध्यानी पहले, भगत राम मॉर्डन स्कूल के ही स्वास्तिक रावत ने दूसरा व पीएम श्री जीजीआईसी स्कूल की सृष्टि शाह ने तीसरा स्थान हासिल किया। मुख्य अतिथि आरती बहुगुणा ने सभी प्रतिभागियों को ऐसी प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने पर जोर दिया। कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं से छात्र–छात्राओं को मंच मिलता है। प्रतियोगिता में संस्था के अध्यक्ष भरत सिंह रावत, सचिव सुदर्शन सिंह नेगी, कोषाध्यक्ष मनीष लिंगवाल, अंकित नेगी, विपुल चंदोला, दीपक बिष्ट, सुहानी नौटियाल, आयुषी नेगी, प्रीति रावत, अशोक थपलियाल, नीरज आदि शामिल रहे ।

नार्थ कार्बेट रिसोर्ट संचालन को दिया धरना

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः वर्षा से बंद पड़े कौड़िया स्थित नार्थ कार्बेट रिसोर्ट के संचालन को लेकर नागरिक मंच ने धरना दिया। कहा कि करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी रिसोर्ट का उपयोग नहीं किया जा रहा। नतीजा, रिजोर्ट का भवन खंडहर में तब्दील होता जा रहा है।

रविवार को मंच ने रिसोर्ट के बाहर बैठकर धरना दिया। मंच के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश नैथानी ने कहा कि गढ़वाल मंडल विकास निगम ने करोड़ों की लागत से रिसोर्ट का निर्माण करवाया, जिससे एक तरफ पर्यटन को बढ़ावा मिलता वहीं स्थानीय युवाओं को भी रोजगार के अवसर प्राप्त होते, लेकिन रिजोर्ट बनने बाद वह बंद पड़ा हुआ है, जिसके लिए पूरी तरह से गढ़वाल मंडल विकास निगम जिम्मेदार है। देखरेख के अभाव में रिजोर्ट खंडहर बन गया है, रिजोर्ट के खिड़ी, दरवाजे सहित मंहगा सामान चोरी हो गया है। कहा कि गढ़वाल मंडल विकास निगम के सारे रिजोर्ट सुचारू रूप से संचालित हो रहे है, लेकिन आधुनिक सुविधाओं से युक्त कौडिया में बना रिजोर्ट का संचालन नहीं नहीं हो रहा है। नागरिक मंच ने निर्णय लिया कि रिजोर्ट के संचालित होने तक गेट के समीप क्रमिक धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इस मौके पर गोविंद डंडरियाल, राजेंद्र सिंह नेगी, अतुल भट्ट, चित्रमणि देवलियाल, वीपी जोशी, जेपी ध्यानी, इंद्रमणि देवरानी, वाचस्पति बहुखंडी, सुदीप बौंठियाल मौजूद रहे।

कौडिया स्थित नार्थ कार्बेट रिजोर्ट के गेट पर धरने में बैठे नागरिक मंच के सदस्य

पंचायत चुनाव में भाजपा को मिल रही बेह्तर जीत

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) अजय कुमार ने कहा कि पंचायत चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को बेहतर जीत मिल रही है। गांव-गांव में भाजपा के विकास कार्य गूंज रहे हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों से भी प्रत्याशियों की जीत के लिए कार्य करने की अपील की।

दुगड्डा में आयोजित चुनाव प्रबंधन की बैठक लेते हुए अजय कुमार ने यह बात कही। कहा कि यमकेश्वर और लैंसडाउन विधानसभा के अंतर्गत 15 जिला पंचायत वार्डों में पार्टी समर्थित प्रत्याशियों को चुनाव जिताने का लक्ष्य पूरा करने के लिए कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर की योजना बनाकर प्रचार प्रसार में जुटना होगा। कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पंचायतों को सशक्त बनाने के लिए ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। कहा कि केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का ग्रामीणों तक अधिकतम लाभ पहुंचाने के लिए त्रिस्तरीय पंचायतों में ऐसे आदर्श व योग्य प्रत्याशियों का निर्वाचन आवश्यक है, जो सरकार के प्रतिनिधियों, सांसदों, विधायकों से समन्वय बनाकर क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। उन्होंने भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से पंचायत चुनावों में पार्टी के अधिकृत प्रत्याशियों की जीत सुनिश्चित करने के लिए जमीनी योजना बनाकर पूरे मनोयोग से प्रचार प्रसार में जुटने का आह्वान किया। बैठक में लैंसडाउन विस के विधायक दिलीप रावत, यमकेश्वर विस के विधायक रेनू बिष्ट, कोटद्वार नगर निगम के महापौर शैलेंद्र सिंह रावत, जिलाध्यक्ष राजगौरव नौटियाल, नवीन ठाकुर, डा.जयपाल सिंह चौहान, गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष राजेंद्र अण्थ्वाल, राज्य सिंचाई सलाकार परिषद उपाध्यक्ष ऋषि कंडवाल, महिला मोर्चा की गढ़वाल संयोजिका आशा बनियाल, दीपक ध्यानी, विजयानंद पोखरियाल, शांता बमराड़ा मौजूद रहे।

दुगड्डा में आयोजित भाजपा कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित करते अजय कुमार

दुकान में चोरी करने वाले दो गिरफ्तार

कोतवाली पुलिस हिरासम में चोर

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः बुद्ध पार्क स्थित एक दुकान में चोरी करने वाले दो बदमाशों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। चोरों के पास से चोरी किया गया सामान भी बरामद हुआ है।

दो दिन पूर्व दुकान स्वामी सोहित अग्रवाल की ओर से पुलिस को तहरीर दी गई थी। बताया कि रात के समय दुकान में ताला लगाकर वह घर चले गए थे। लेकिन, अगले दिन जब वह दुकान खोलने के लिए पहुंचे तो शटर पर लगा ताला टूटा हुआ था। साथ ही दुकान के भीतर गल्ले में रखी नगदी व सिगरेट के पैकेट गायब थ। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाले। जिसमें दो युवक घटना को अंजाम देते हुए नगर आए। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक रमेश तनवार ने बताया कि मामले में लकड़ीपड़ाव निवासी राजेश व अजर को रेलवे स्टेशन के समीप से गिरफ्तार किया गया है। आरोपितों के पास के चोरी का सामान बरामद हुआ है।

छात्रों को जागरूक कर नशामुक्ति की शपथ दिलाई

नई टिहरी। कोतवाली नई टिहरी की ओर से राजकीय इंटर कॉलेज ढुंगीधार और कांडीखाल में महिला संबंधी अपराधों की रोकथाम और जन जागरूकता के लिए छात्र–छात्राओं को आत्मरक्षा के उपाय, नशा मुक्ति, साइबर क्राइम और सड़क सुरक्षा की जानकारी देते हुए उन्हें नशा मुक्ति की शपथ दिलाई गई।

जीआईसी ढुंगीधार और जीआईसी कांडीखाल में टिहरी पुलिस की ओर से छात्र–छात्राओं और शिक्षकों को नशा मुक्ति अभियान, सड़क सुरक्षा, साइबर क्राइम और महिला एवं बाल अपराध की जानकारी देकर जागरूक किया गया। देवभूमि आईकेएफयू ताइक्वांडो संगठन के अध्यक्ष अशोक राठौड़ और सचिव अनुष्का खणका ने छात्राओं को आत्मरक्षा के लिए ताइक्वांडो, जूडो–कराटे की जानकारी दी। उन्होंने सुरक्षात्मक उपायों सहित आपतकालीन नंबरों को अपने मोबाइल पर सेव कर आपात स्थिति में पुलिस, प्रशासन को सूचना देने की अपील की। एसएसआई धनराज सिंह बिष्ट और महिला उप निरीक्षक रीना नेगी ने छात्र–छात्राओं को यातायात के नियमों का स्वयं भी पालन करने और अपने परिजनों को प्रेरित करने की अपील की। साथ ही अनावश्यक क्रिया–कलापों व नशाखोरी में ना पड़ने, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम का उपयोग अपनी शिक्षा के लिए करने, किसी भी फ्रॉड कॉल के बहकावे में ना आने, डिजिटल अरेस्ट, साइबर फ्रॉड होने पर तत्काल 1930 और 112 पर सूचना देने की अपील की।

पंचायत चुनाव के लिए स्ट्रांग रूम किए तैयार

नई टिहरी। जिला निर्वाचन अधिकारी डीएम नितिका खंडेलवाल के निर्देशन में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के सफल संपादन के लिए जिले के सभी 9 ब्लॉक क्षेत्रों में निर्वाचन सामग्री के लिए स्ट्रांग रूम तैयार किए गए हैं। उन्होंने बताया कि जाखणीधार ब्लॉक की निर्वाचन सामग्री ब्लॉक मुख्यालय टिपरी में प्रमुख कार्यालय भवन और अतिथि गृह के दोनों कक्षों को स्ट्रांग रूम बनाया है। जौनपुर के लिए जीआईसी थत्यूड़, थौलधार के लिए ब्लॉक कार्यालय थौलधार, देवप्रयाग के लिए जीआईसी हिंडोलाखाल, प्रतापनगर के लिए जीआईसी प्रतापनगर, चंबा के लिए ब्लॉक सभागार चंबा का प्रथम तल, कीर्तिनगर के लिए ब्लॉक कार्यालय कीर्तिनगर, नरेंद्रनगर के लिए ब्लॉक मुख्यालय फकोट और भिलंगना के लिए ब्लॉक मुख्यालय घनसाली के भवन संख्या 3 को स्ट्रांग रूम बनाया गया है। बताया कि प्रथम चरण का मतदान 24 जुलाई को जौनपुर, प्रतापनगर, जाखणीधार, थौलघार और भिलंगना जबकि द्वितीय चरण का मतदान 28 जुलाई को कीर्तिनगर, देवप्रयाग, नरेंद्रनगर और चंबा ब्लॉक में होगा।

रोटरी क्लब के नवनियुक्त पदाधिकारियों ने ली पद व गोपनीयता की शपथ

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः रोटरी क्लब के नवनियुक्त पदाधिकारियों ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। इस दौरान भविष्य में होने वाले कार्यों के बारे में जानकारी दी गई। कहा कि क्लब का उद्देश्य समाज को बेहतर दिशा में ले जाना है।

रविवार को एक होटल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रोटरी मंडल 3100 के मंडलाध्यक्ष सीए नितिन अग्रवाल ने नवनियुक्त अध्यक्ष ऋषि ऐरन, सचिव विजय कुमार सहित अन्य कार्यकारिणी को पद व गोपनीयता की शपथ दिलवाई। वक्ताओं ने कहा कि हमें युवाओ को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करना चाहिए। युवा ही दो की धरोहर हैं। निवर्तमान अध्यक्ष गुरुबचन सिंह ने वर्ष भर किए गए कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। नवनियुक्त अध्यक्ष ऋषि ऐरन ने कहा कि संगठन को साथ लेकर समाजिक कार्यों को आगे बढ़ाया जाएगा। इस मौके पर मंडलीय कोषाध्यक्ष नितिन प्रकाश सिंह, पंकज अग्रवाल, विजय प्रकाश, रीजनल कॉर्डिनेटर अनीत चावला, वाईपी गिलरा, विपिन बक्शी, अनिल भोला, बीना रावत, राजेश गुप्ता, गोपाल बंसल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में मालिनी पत्रिका का भी विमोचन किया गया। इस मौके पर नवनियुक्त उपाध्यक्ष डीपी सिंह , सचिव विजय कुमार, उप सचिव बीना रावत, कोषाध्यक्ष धनेश अग्रवाल, सार्जेंट आर्म्स राजेश गुप्ता, निदेशक क्लब सर्विस अमित अग्रवाल, वोकेशनल सर्विस संजीव अग्रवाल, सामुदायिक सर्विस सचिन गोयल, यूथ सर्विस अनिल भोला, रोटरी फाउंडेशन सर्विस कमल गुप्ता व अनुरागअग्रवाल, वाटर कर्न्सवेशन कुलदीप अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

पद एवं गोपनीयता की शपथ लेते क्लब के सदस्य

गैप वर्ष वाले छात्रों को सशर्त स्नातक प्रथम वर्ष में मिलेगा प्रवेश

नई टिहरी। श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय की 16वीं शैक्षिक परिषद की बैठक शनिवार को आयोजित की गई। बैठक में परीक्षा समिति की नवीं बैठक के कार्यवृत्त का अनुमोदन किया गया। श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के पीएचडी अध्यादेश–2025 का अनुमोदन भी किया गया। अन्य प्रस्तावों को भी अनुमोदित कर भावी योजनाओं को लेकर निर्णय लिये गये। विश्वविद्यालय की रिसर्च एडवाईजरी कमेटी (आरएसी) की बैठक को अनुमोदित किया गया। जिसमें जिसमें मुख्यतः वर्तमान सत्र 2025–26 से पीएचडी शोधार्थियों के लिये दिशा–निर्देश निर्गत किये गये। विश्वविद्यालय के कला संकाय, विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के नये एनईपी पाठ्यक्रम का अनुमोदन कर सत्र 2025–26 में स्नातक प्रथम वर्ष में प्रवेश करने वाले छात्रों का शिक्षण नये पाठ्यक्रम के अनुसार करने का निर्णय हुआ। जिसे अनुमोदन के उपरांत विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है। इंटरमीडिएट की कक्षा के बाद गैप वर्ष वाले छात्र कुछ नियम एवं शर्तों के आधार पर स्नातक प्रथम में मेरिट के आधार पर प्रवेश ले सकते हैं। जिसके लिये उन्हें इस आशय का शपथ पत्र देना होगा कि उनके द्वारा गैप अवधि में कभी भी कोई स्नातक पाठ्यक्रम में पूर्ण नहीं किया गया। ऐसे छात्र जिनके द्वारा गणतंत्र परेड एवं खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने पर विषम सेमेस्टर की परीक्षा से वंचित रह गये थे, उनकी विश्वविद्यालय स्तर पर शीघ्र ही परीक्षा आयोजित कर परीक्षाफल घोषित किया जायेगा। श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के परिसरों एवं सम्बद्ध संस्थानों में संचालित बीसीए पाठ्यक्रम एवं नवनिर्मित बीसीए एआई एंड एमएल पाठ्यक्रम में विश्वविद्यालय के अध्यादेश के अनुसार प्रवेश के लिए पात्रता के सम्बन्ध में अनुमोदन प्राप्त किया गया। कुलपति ने श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय में संस्थान विकास योजना के गठन के विषय में परिषद के सम्मुख जानकारी प्रदान की गयी।

मतदान कार्मिकों को मतदान करने की सुविधा प्रदान करने की मांग

नई टिहरी। प्रदेशीय जूनियर हाई स्कूल (पूमा) शिक्षक संघ के पदाधिकारियों ने सचिव राज्य निर्वाचन आयोग को पत्र प्रेषित कर त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में मतदान कार्मिकों को मतदान करने की सुविधा प्रदान करने की मांग की है। सचिव को लिखे पत्र में मांग करते हुए कहा कि राज्य निर्वाचन आयोग ने मतदान में लगे शिक्षक कार्मिकों के मतदान को लेकर कोई भी दिशा–निर्देश न दिये जाने के कारण त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में निर्वाचन कार्य में लगे ऐसे शिक्षक कार्मिक जिनके विकासखंड में जिस चरण मतदान संपन्न होना है। उसी चरण में उनको उनको मतदान कार्य में लगाये जाने से शिक्षक कार्मिक मतदान के संवैधानिक अधिकार से वंचित हो रहे हैं।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों का किया सम्मान

नई टिहरी। टीएचडीसी–आईकेसीए (इंडियन कयाकिंग एंड कैनोइंग) हाई परफार्मेंस एकेडमी कोटेश्वर के उत्कृष्ट खिलाड़ियों के बेहतरीन प्रदर्शन को लेकर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिनमें जापान में हुए एशिया–पैसिफिक कैनो स्प्रिंट कप और थाईलैंड में अंडर–23 एशियन कैनो स्प्रिंट चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कई पदक विजेता खिलाड़ी शामिल हैं। टिहरी में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि टीएचडीसी के अधिशासी निदेशक एलपी जोशी ने खिलाड़ियों को सम्मानित कर कहा कि टीएचडीसी ने इंडियन कयाकिंग एंड कैनोइंग एसोसिएशन के सहयोग और उत्तरांचल ओलंपिक संघ के समर्थन से कोटेश्वर में यह अकादमी बनाई है,जो खेल उत्कृष्टता का प्रमुख केंद्र बन रही है। उन्होंने खिलाड़ियों को शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी। कहा कि गत वर्ष स्थापित यह अकादमी राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त बन गई है। प्रिंस गोस्वामी को उन्होंने सम्मानित किया। जिन्होंने जापान के कोमात्सु में एशिया–पैसिफिक कैनो स्प्रिंट कप 2025 में दो स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। गोस्वामी ने कैनो 1–1000 और कैनो 1– 500 मीटर में यह उपलब्धि हासिल की। जबकि थाईलैंड में जूनियर व अंडर–23 एशियन चैंपियनशिप में कैनो 2 में रजत जीतने वाले पीएच. ज्ञानेश्वर सिंह व अरविंद वर्मा, टोमथिलंगनबा नगाशेपम व हर्षवर्धन सिंह, रिमसन माइरेम्बम व जसप्रीत सिंह ने टीम इवेंट में कांस्य, गौरी कृष्णा एम ने सी–2 में कांस्य पदक हासिल किया। सभी को ईडी ने प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

संक्षिप्त समाचार

होटल के ऊपर चीड़ का पेड़ गिरने से नुकसान

उत्तरकाशी। जिले में हो रही बारिश से जनजीवन प्रभावित है। रविवार तड़के खरादी में एक होटल के ऊपर चीड़ का पेड़ उखड़कर मकान की दीवार व शटर फाड़ कर निकल गया। इससे तीर्थयात्रियों सहित घर के लोग बाल-बाल बचे। इससे मकान का हिस्सा सहित यात्रियों का वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। ग्रामीणों ने राष्ट्रीय राजमार्ग से सटे पेड़ों को तत्काल हटाने की मांग की है। रविवार की सुबह एनएच 134 के खरादी में चीड़ का बड़ा पेड़ उखड़कर कुलदीप सिंह पुत्र भागीराम सिंह निवासी खनेड़ा के दोमंजिले होटल व मकान के ऊपर दीवार व शटर तोड़ कर निकल गया। पेड़ गिरने से तीर्थयात्री व घर के लोग बाल-बाल बच गए। यात्री व घर के लोग उस वक्त मकान के दूसरे कमरों में थे। जिससे बड़ा हादसा टल गया। सूचना मिलते ही पुलिस व वन विभाग की रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची। ग्रामीणों ने प्रभावितों को मुआवजा देने की मांग की है। ग्रामीणों ने राज्य सरकार व वन विभाग से एनएच के ऊपरी हिस्से में मौजूद दर्जनों चीड़ के भारी भरकम पेड़ों को काटने की मांग की। प्रभागीय वनाधिकारी रविन्द्र पुंडीर ने बताया कि खरादी में रविवार को पेड़ गिरने से एक होटल सहित वाहन को नुकसान पहुंचा है। एनएच के ऊपरी हिस्से के पेड़ों को हटवाने के लिए वन निगम को कहा गया है। साथ ही उप प्रभागीय वनाधिकारी को घटनास्थल पर भेजकर रिपोर्ट मांगी गई है।

पंचायतों में सरकार बनाने के लिए जुटें कार्यकर्ता: कोठारी

उत्तरकाशी। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर भाजपा के प्रदेश महामंत्री व चुनाव जिला प्रभारी आदित्य कोठरी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कहा कि गांव की सरकार बनाने के लिए सभी पार्टी कार्यकर्ता शिद्दत से कार्य करें। पार्टी समर्थित प्रत्याशियों के पक्ष में कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने व भाजपा की रीति नीति पर कार्य करने को लेकर भाजपा के प्रदेश महामंत्री आदित्य कोठरी शनिवार सांय को चिन्यालीसौड़ पहुंचे। जहां उन्होंने जहां उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक ली और पंचायत चुनाव की तैयारियों का फीडबैक लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि जिला पंचायत, क्षेत्र पंचायत व प्रधानों की सीटों को बीजेपी की झोली में डालने के लिए पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को अहम भूमिका है। कहा कि चिन्यालीसौड़ में बीजेपी जीत का परचम लहराएगी। उन्होंने पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से चुनावी रणनीतियों में चुनावी कार्यालय खोलने, प्रत्याशियों के लिए समर्थन जुटाना, जनसंपर्क बढ़ाना और मतदाताओं को पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में जागरूक करने का अभियान जैसे बिंदुओं पर चर्चा की और सभी से एकजुट होने का आह्वान किया। बैठक में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति मोर्चा मंत्री स्वराज विद्वान, सत्ये सिंह राणा, मंडल अध्यक्ष मनीष कुकरेती, अमित सरलानी,शैलेंद्र सिंह कोहली, विजय बडोनी, प्रकाश चंद रमोला, विजेंद्र सिंह रावत लक्ष्मण सिंह चौहान,सुभाष नौटियाल, कृतम सिंह पवार सहित प्रमुख कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पंचायत चुनाव के लिए 51 शेडो केंद्र स्थापित

बागेश्वर। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर प्रशासन ने शेडो मतदान केंद्रों में व्यवस्था सुचारू बनाए रखने के लिए विशेष रणनीति तैयार की है। जिले में कुल 51 शेडो मतदान केंद्र चिह्नित किए गए हैं। कई चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बागेश्वर प्रशासन ने शेडो केंद्रों में रूट संचालन हेतु शिक्षक स्टाफ या अन्य तृतीय श्रेणी कर्मचारी उपलब्ध कराने का प्रस्ताव तैयार किया है। बता दें कि पिछली बार जिले में तीन चरणों में चुनाव हुए थे, लेकिन इस बार बागेश्वर जिले में एक ही चरण में मतदान कराया जा रहा है।

इसके चलते प्रशासनिक और लॉजिस्टिक व्यवस्थाओं का भार भी अधिक बढ़ रहा है। चुनाव के दिन सूचना संप्रेषण, सामग्री आपूर्ति और शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए शेडो केंद्रों में विशेष ड्यूटी स्टाफ की आवश्यकता होती है। बता दें कि राजकीय कर्मचारियों की बड़ी संख्या पहले से ही अन्य चुनावी ड्यूटी पर है। वहीं पुलिस कर्मचारियों की टीम चारधाम यात्रा, कावड़ मेला, कैलाश मानसरोवर यात्रा आदि में पहले से तैनात हैं। इसके चलते अन्य जनपदों से अतिरिक्त स्टाफ भी यहां उपलब्ध नहीं हो पाया है। इसके चलते शेडो मतदान केंद्रों पर अनुभवी शिक्षकों को रूट संचालन की विशेष जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। इन शिक्षकों को चुनाव पूर्व रूट संचालन व सूचना संप्रेषण से जुड़ा प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिससे कि वे कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी अपनी जिम्मेदारी कुशलतापूर्वक निभा सकें।

परमार्थ निकेतन का बाघखाला सेवा शिविर बना जनजागरूकता का तीर्थ

ऋषिकेश। स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद व नेतृत्व में परमार्थ निकेतन द्वारा आयोजित निःशुल्क चिकित्सा एवं जनजागरूकता शिविर में न केवल स्वास्थ्य सेवाएं दी जा रही हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और प्लास्टिक मुक्त तीर्थ यात्रा के लिए भी शिवभक्तों को जागरूक किया जा रहा है।

शिवभक्ति के इस पावन माह श्रावन में जहां लाखों श्रद्धालु नंगे पांव, हर हर महादेव के उद्घोष के साथ कांवड़ यात्रा पर निकले हैं, वहीं परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश द्वारा बाघखाला क्षेत्र में चलाया जा रहा सेवा और स्वच्छता का संकल्प एक अनूठी प्रेरणा है। स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी स्वयं शिवभक्तों से मिले और उन्हें बोल बम, बोल बम, कचरा कर दो जड़ से खत्म का संकल्प कराते हुये कपड़े के थैले भेंट कर उन्हें स्वच्छ, प्लास्टिक मुक्त कांवड यात्रा हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिवभक्ति तभी सार्थक है, जब हम शिव की बनाई सृष्टि को भी पूजें और उसका सम्मान करें और उसे प्रदूषित न होने दे। स्वामी जी ने कहा कि शिवभक्ति का सर्वोच्च रूप सेवा और समर्पण है। जिस धरती पर हम जल चढ़ाने जा रहे हैं, यदि वह ही अशुद्ध हो, प्रदूषित हो, तो यह अधूरी भक्ति है। शिव केवल कैलाश में नहीं, धरती के कण-कण में हैं। इस विशेष जागरूकता अभियान के अंतर्गत परमार्थ निकेतन द्वारा पपेट शो के माध्यम से शिवभक्तों को अत्यंत सरल, रोचक शैली में यह संदेश दिया जा रहा है कि सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करे तथा अपनी धरती मां का सम्मान करे। शिवभक्ति केवल मंदिरों में जल चढ़ाने से नहीं, बल्कि माँ प्रकृति को स्वच्छ और स्वस्थ बनाए रखने से भी होती है। शिवभक्तों को कपड़े के थैले, हाथ धोने हेतु साबुन, और स्वच्छता संबंधी स्लोगन युक्त सामग्री वितरित की जा रही है। हर दिन हजारों श्रद्धालुओं को यह संदेश दिया जा रहा है कि ह्वना पॉलीथिन, ना प्रदूषण। स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने आग्रह किया कि श्रद्धालु नीलकंठ महादेव पर जल चढ़ाकर बोल बम, बोल बम, कचरा कर दो जड़ से खत्म के संकल्प के साथ अपने घर लौटें।

चुनाव संपन्न कराने में सेक्टर मजिस्ट्रेट की भूमिका अहम

बागेश्वर। त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से रविवार को संस्कृति विभाग के ऑडिटोरियम में जोनल, सेक्टर मजिस्ट्रेटों एवं संबंधित पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया। इसमें 15 जोनल मजिस्ट्रेट, 61 सेक्टर मजिस्ट्रेट और 76 पुलिस अधिकारियों ने प्रतिभाग किया। जिलाधिकारी ने निर्वाचन कार्य में तैनात अधिकारियों को उनके कर्तव्यों, अधिकारों एवं जिम्मेदारियों की विस्तृत जानकारी दी। कहा, सेक्टर मजिस्ट्रेट अपने क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों एवं पीठासीन अधिकारियों से समन्वय स्थापित करें। पोलिंग पार्टियों की रवानगी, मतदान केंद्र पर उनकी उपस्थिति, मतदान प्रारंभ होने, प्रत्येक दो घंटे में मतदान की प्रगति तथा मतदान समाप्ति की रिपोर्ट समय पर भेजना सुनिश्चित करें। मतदान 24 जुलाई सुबह आठ बजे से शाम पांच बजे तक कराया जाएगा। मतदान केंद्रों पर मोबाइल फोन का उपयोग प्रतिबंधित रहेगा।

बागेश्वर की तीन सड़कों पर आवाजाही ठप

बागेश्वर। जिले में बंद सड़कों ने ग्रामीणों के साथ ही प्रशासन की भी नींद उड़ा रखी है। भूस्खलन के कारण जिले की तीन सड़कें लंबे समय से बंद हैं। इसमें से पोथिंग मोटर मार्ग बंद होने से लोग सबसे अधिक परेशान हैं। यहां के लोगों को तहसील तथा जिला मुख्यालय आने के लिए 18 किमी पैदल चलना पड़ रहा है। यदि समय पर मलबा नहीं हटा तो पोलिंग पार्टियों को भी पैदल दूरी नापनी होगी। जिला आपदा प्रबंधन कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार कपकोट-पिंडारी तथा काफलीकमेड़ा मोटर मार्ग मलबा आने से बंद है। यह मार्ग एक पखवाड़े से बंद हैं। ग्रामीण चार से पांच किमी पैदल चलकर घर पहुंच रहे हैं, लेकिन पोथिंग मोटर मार्ग दो दिन से भूस्खलन के चलते बंद है। रोड बंद होने से लोगों की आवाजाही ठप है। ग्रामीणों ने बताया कि उन्हें तहसील तथा जिला मुख्यालय आने के लिए 18 किमी पैदल चलना पड़ रहा है। ऐसे में यदि कोई गांव में बीमार हो गया तो उसे लाने में खासी दिक्कत होगी। करीब पांच हजार की आबादी प्रभावित है। गांव में संचार सुविधा भी नहीं है। इस कारण परेशानी और बढ़ गई है। संजय जोशी, मदन सिंह, हरीश जोशी ,कमलेश गढ़िया, गोपाल सिंह, ललित सिंह, कमल सिंह आदि ने प्रशासन से जल्द बंद मार्ग खोलने की मांग की है। कहा कि यदि मार्ग नहीं खुला तो पोलिंग पार्टियों को भी इनता ही पैदल चलना पड़ेगा। इधर जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी शिखा सुयाल ने बताया कि बंद मार्ग खोलने का काम चल रहा है। इधर रविवार अपराह्न चार बजे कपकोट तथा दुग-नाकुरी तहसील क्षेत्र में बारिश हो रही है। बारिश से लोगों को उमसभरी गर्मी से राहत मिल गई है। धान की खेती के लिए भी बारिश संजीवनी का काम करेगी।

सीएम हेल्प लाइन में आने वाली शिकायतों का तत्काल हो समाधान

देहरादून। सीएम हेल्प लाइन में ऊर्जा निगम के स्तर पर लंबित शिकायतों का तत्काल समाधान सुनिश्चित कराना होगा। एमडी यूपीसीएल अनिल कुमार ने फील्ड के सभी इंजीनियरों को विशेष निर्देश जारी किए। साफ किया कि सीएम हेल्प लाइन में आने वाली शिकायतों का सर्वोच्च प्राथमिकता पर समाधान सुनिश्चित कराया जाए। एमडी यूपीसीएल ने सभी मुख्य अभियन्ताओं को सख्ती के साथ आदेशों को सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। कहा कि मुख्यमंत्री हेल्प लाइन पोर्टल (1905) के माध्यम से प्राप्त उपभोक्ताओं के सुझावों, सूचनाओं एवं समस्याओं का त्वरित समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाए। सभी अधिकारी उन शिकायतों को व्यक्तिगत दायित्व मानते हुए तत्काल, समर्पण भाव एवं जिम्मेदारी के साथ निस्तारित करेंगे। कहा कि यह हेल्पलाइन उपभोक्ता सेवा सुधार में अहम भूमिका निभा रही है। ऐसे में किसी भी प्रकार की लापरवाही, उदासीनता और अनावश्यक विलम्ब पाए जाने पर सम्बन्धित के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। इसके लिए सम्बन्धित अधिकारी व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी माने जायेंगे। फील्ड में ये काम कराने होंगे सुनिश्चित एमडी यूपीसीएल ने कहा कि सभी इंजीनियर अपने अपने क्षेत्रों में खराब, क्षतिग्रस्त पोलों, लाइनों और ट्रांसफार्मरों की तुरन्त पहचान कर उनका समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करें। जोन, मण्डल, खण्ड और उपखण्ड स्तर तक का अल्पकालीन और दीर्घकालीन भविष्य की योजनाएं तैयार की जाएं। ताकि विद्युत आपूर्ति व्यवस्था और अधिक मजबूत और आधुनिक हो सके। सभी ट्रांसफार्मर, इन्सुलेटर एवं लोड की नियमित निगरानी कर उनकी कार्यक्षमता के अनुरूप आवश्यक सुधार किए जाएं। सभी तीर्थ स्थलों, पर्वतीय क्षेत्रों, मानसून प्रभावी इलाकों और अति संवेदनशील स्थलों पर 24 घंटे सतर्कता बनाते हुए निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

दिल्ली का किशोर गंगा में डूबकर लापता

हरिद्वार। गंगा स्नान करने आए दिल्ली निवासी एक किशोर की गंगा के तेज बहाव में बह गया। लापता किशोर की तलाश में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है, लेकिन अभी तक कुछ पता नहीं चल सका है। पुलिस के मुताबिक 17 वर्षीय वंश चौहान पुत्र राकेश चौहान, निवासी हर्ष विहार दिल्ली शनिवार को परिजनों के साथ हरिद्वार आया था। शनिवार शाम को हरिपुर कलां स्थित गीता कुटीर घाट पर वह परिजनों संग स्नान कर रहा था। तभी वह गंगा के तेज बहाव की चपेट में आकर डूब गया। घटना की सूचना मिलते ही एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और तुरंत सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया। टीम द्वारा देर शाम तक गंगा के विभिन्न संभावित स्थानों पर गहन खोजबीन की गई, लेकिन किशोर का कोई सुराग नहीं मिल सका।

भंडारे लगाकर भोले के भक्तों की सेवा में जुटे श्रद्धालु

हरिद्वार। सावन माह में कांवड़ यात्रा को लेकर धर्मनगरी का वातावरण पूरी तरह शिवमय हो गया है। हरिद्वार-लक्सर मार्ग पर जगह-जगह श्रद्धालु भंडारे लगाकर भोले के भक्तों की सेवा में जुटे हैं। कहीं हलवा-पूड़ी परोसी जा रही है, तो कहीं कढ़ी-चावल का स्वाद चखाया जा रहा है। हजारों शिवभक्तों ने इन भंडारों में बैठकर श्रद्धा से प्रसाद ग्रहण किया। गांव फेरुपुर में संजय चौहान की ओर से लगाए गए भंडारे में कांवरियों को कढ़ी-चावल व हलवे का प्रसाद परोसा गया। वहीं कटारपुर गांव में चल रहे तीन दिवसीय भंडारे में भी सेवा जारी रही, जिसका आयोजन विवेक चौहान द्वारा किया गया। जगजीतपुर में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संजय चौहान ने शिवभक्तों को कढ़ी-चावल और आलू-पूड़ी का प्रसाद वितरित किया।

फेरुपुर में अमित सैनी, कटारपुर में सुधीर चौहान और विवेक चौहान, बादशहपुर में प्रधान नेत्रपाल, और धनपुरा में पंकज सैनी ने कांवरियों को हलवा, कढ़ी, आलू-पूड़ी और चावल आदि का प्रसाद खिलाया। भंडारों में धर्मेंद्र सिंह चौहान, बलवंत सिंह सैनी, ठेकेदार इंद्र प्रताप सिंह, डॉ. यशपाल सिंह सैनी, वीरेंद्र प्रताप सिंह, बबलू राणा, अभिजीत राणा, श्यामलाल, सोहनलाल, रोहित राणा, दीपक चौहान, विनीत प्रताप सिंह, श्याम सिंह सैनी, नूतन कुमार, जितेंद्र कश्यप, अर्जुन चौहान, अकरम अली, प्रशांत, रवि, सेंकी और मांगेराम सैनी आदि ने भी कांवड़ियों को श्रद्धा से प्रसाद परोसा। कांवड़ियों की सेवा में पथरी पुलिस भी पीछे नहीं रही। एसओ पथरी मनोज नौटियाल और फेरुपुर चौकी प्रभारी के नेतृत्व में पुलिसकर्मियों ने श्रद्धालुओं को पानी की बोतल, फूटी और हलवा वितरित कर भोले के भक्तों का स्वागत किया।

नीलकंठ जा रहे डाक कांवड़ियों के वाहनों से हरिद्वार में जाम

हरिद्वार। में रविवार को लगातार दूसरे दिन भी डाक कांवड़ियों का सैलाब उमड़ पड़ा। जिसके चलते हरिद्वार-ऋषिकेश हाईवे पर घंटो लंबा जाम लगा। कांवड़ियों के वाहन रुक-रुक कर आगे बढ़ रहे थे। कांवड़ियों की भीड़ के चलते फोरलेन भी छोटा सा नजर आया। जबकि हरिद्वार से दिल्ली जाने वाला मार्ग पूरी तरह खुला नजर आया। आलम यह रहा कि डाक कांवड़ियों के वाहनों को एक किलोमीटर की दूरी तय करने पर आंधे घंटे से अधिक का समय लग गया। जबकि सामान्य दिनों में तीन मिनट का समय लगता है। बड़ी संख्या में डाक कांवड़ वाहन कुंभनगरी में दस्तक दे रहे हैं और हरकी पैड़ी से गंगा जल लेकर नीलकंठ दर्शन के लिए रवाना हो रहे हैं। रविवार को शंकराचार्य चौक से लेकर सर्वानंद घाट के पास फ्लाई ओवर तक जाम लगा रहा। सुबह सात बजे से शाम तक जाम की स्थिति बनी रही। डाक कांवड़ियों के वाहनों के अलावा दोपहिया वाहनों की संख्या भी बेहिसाब रही, जो लगातार बढ़ती ही जा रही है। आमजन ने तो हाईवे का रुख ही नहीं किया। जाम का मुख्य बिंदू वीआईपी घाट के पास रहा, जहां से कांवड़िये अपने वाहन लगाकर सड़क पार कर रहे थे, इसके अलावा हाईवे के किनारे और पुलों पर वाहन खड़े किए थे, जिस कारण जाम की स्थिति बनी हुई थी।

उत्तराखंड निवेश उत्सव भाजपा का एक और प्रचारमूलक आयोजन : कांग्रेस

देहरादून। रुद्रपुर में आयोजित उत्तराखंड निवेश उत्सव में एक लाख करोड़ की ग्राउंडिंग के भाजपा सरकार के दावे को साबित करने के लिए प्रदेश कांग्रेस ने श्वेत पत्र जारी करने की मांग की है। पार्टी ने इस उत्सव को भाजपा सरकार का एक और प्रचारमूलक आयोजन बताया है। पार्टी की प्रदेश प्रवक्ता गरिमा दसौनी ने कहा कि मंच से किए गए दावे सुनने में भले ही आकर्षक लगें हों, लेकिन जमीनी सच्चाई इससे कोसों दूर है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की ओर से विकास और निवेश के जो आंकड़े पेश किए गए हैं, वह महज कागजी घोषणाओं की लिस्ट हैं, जिनका धरातल पर कोई प्रभाव नहीं दिखता। उन्होंने कहा कि यदि इतना निवेश हुआ है तो वह धरातल पर दिखता क्यों नहीं है। प्रदेश में कहां, कितने नए उद्योग लगे और कितनों को वास्तविक रोजगार मिला है। दसौनी ने कहा कि सीएम धामी दावा करते हैं कि दो हजार भ्रष्ट अधिकारियों पर कार्रवाई हुई है, जबकि प्रदेश की जनता जानती है कि भाजपा शासन में भ्रष्टाचार संस्थागत रूप ले चुका है।

धूणी मंदिर वार्ड में चलाया सफाई अभियान

अल्मोड़ा। विलुप्त होते परंपरागत जल स्रोतों के संरक्षण की दिशा में अल्मोड़ा नगर में पार्षदों और स्थानीय लोगों की एक अनूठी पहल सामने आई है। पार्षद अमित साह मोनू के नेतृत्व में नगर निगम क्षेत्र के धूणी मंदिर वार्ड में रविवार को नौला सफाई अभियान चलाया गया। इस अभियान में पार्षदों के साथ बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों ने भी सहभागिता निभाई। पार्षद अमित साह ने बताया कि लगभग डेढ़ माह पूर्व नगर क्षेत्र में नौलों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लिया गया था। इसके तहत हर सप्ताह एक दिन नगर के किसी एक नौले की सफाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि कभी अल्मोड़ा नगर में सैकड़ों नौले हुआ करते थे जो शुद्ध पेयजल का प्रमुख स्रोत थे, लेकिन समय के साथ इनमें से अधिकांश नौले उपेक्षा और देखरेख के अभाव में विलुप्त हो गए।

वाहन चोरी की चार घटनाओं का खुलासा कर पांच आरोपी दबोचे

देहरादून। दून पुलिस ने वाहन चोरी की चार अलग-अलग घटनाओं का खुलासा करते हुए पांच आरोपी गिरफ्तार किए हैं। गिरोह में विकासनगर थाने का एक हिस्ट्रीशीटर भी शामिल है। आरोपियों के कब्जे से चोरी की एक एक्टिवा, एक मोटरसाइकिल, अन्य चोरी किए गए दो वाहनों के कलपुर्जे और 10,000 रुपये नकद बरामद किए हैं। इंस्पेक्टर बसंत विहार प्रदीप सिंह रावत ने बताया कि बेअंत सिंह, चतर सिंह रावत, हरीश जेठी और रोहित बजाज ने अपनी मोटरसाइकिल और स्कूटर चोरी होने का केस बीते दिनों दर्ज कराए। पुलिस ने शनिवार देर शाम हरबंसवाला टी एस्टेट के खंडहर में चोरी के वाहनों और उनके कलपुर्जों की खरीद-फरोख्त की सूचना मिली। पुलिस ने मौके पर दबिश दी और पांच आरोपी गिरफ्तार किए। आरोपियों में आस मोहम्मद ने बताया कि वह थाना विकासनगर का हिस्ट्रीशीटर है और पहले भी नशा तस्करी में कई बार जेल जा चुका है। उसने अपने साथी मुनव्वर के साथ मिलकर चोरी की घटनाओं को अंजाम दिया। दोनों नशे की लत के कारण चोरी करते थे। वाहनों को काटकर उनके पार्ट्स कबाड़ियों को बेच देते थे। मुनव्वर की जैतनवाला में बाइक रिपेयरिंग और पार्ट्स की दुकान है, जहां चोरी के पार्ट्स ग्राहकों की गाड़ियों में लगाए जाते थे। अन्य आरोपी कबाड़ी का काम करते थे और चोरी के पार्ट्स खरीदते थे।

ये हुए गिरफ्तार:

1-आस मोहम्मद (34 वर्ष) निवासीजीवनगढ़, विकासनगर

2-मोहम्मद मुनव्वर (23 वर्ष) निवासी जैतनवाला, कैंट।

3-तालिब (20 वर्ष)निवासी तेलपुर चौक, पटेलनगर।

4-रईस (36 वर्ष) निवासी मेंहूवाला, पटेलनगर।

5-सलमान (22 वर्ष) निवासी कांवली रोड, देहरादून।

रोटरी क्लब रानीपुर ने स्वास्थ्य कर्मियों को खाना खिलाया

हरिद्वार। रोटरी क्लब ऑफ रानीपुर की ओर से शनिवार को कावड़ मेले में कार्यरत स्वास्थ्य विभाग के 440 से अधिक डॉक्टर एवं हेल्थ वर्कर को रिफ्रेशमेंट के पैकेट वितरित किए गए। कांवड़ मेले में 22 अलग-अलग अस्थाई चिकित्सा शिविर में यह डॉक्टर और हेल्थ वर्कर कार्यरत हैं। यह सामग्री मेला कंट्रोल रूम में डॉक्टर राजेश गुप्ता की उपस्थिति में वितरित की गई। मौके पर रोटरी क्लब ऑफ रानीपुर के अध्यक्ष अंकुर अग्रवाल, सचिव नवनीत कौशिक, विशाल गुप्ता, सागर मनचंदा, गगन मेहता, ललित बत्रा, शक्ति अग्रवाल एवं मेला अस्पताल के सभी वरिष्ठ अधिकारी और डॉक्टर मौजूद रहे।

मेला अस्पताल परिसर में तीन दिन पेयजल सप्लाई ठप

हरिद्वार। मेला अस्पताल परिसर में पिछले तीन दिनों से पानी की सप्लाई बंद है। इस कारण मेला अस्पताल परिसर में डॉक्टरों, कर्मचारियों, मरीजों और अस्पताल की कॉलोनी ने रहने वाले लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। आरोप है कि तीन दिन से जल संस्थान के अधिकारी कोई सुनवाई नहीं कर रहे है। अस्पताल कर्मचारियों ने समस्या का समाधान नहीं होने पर अवकाश लेकर विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी है। रविवार को भी जल संस्थान के कर्मचारी अस्पताल परिसर और कॉलोनी में पानी की सप्लाई करने नहीं पहुंचे। इस दौरान अस्पताल कॉलोनी के लोगों ने हाथों में बाल्टी-डब्बे लेकर जल संस्थान के खिलाफ प्रदर्शन किया। आरोप है कि एसडीओ तीन दिन से अध्यक्ष दिनेश लखेड़ा प्रदेश, प्रवक्ता राजेंद्र तेश्वर, प्रदेश ऑडिटर महेश कुमार, जिला उपाध्यक्ष मूल चंद चौधरी आदि का कहना है कि जल्द पानी की समस्या का निस्तारण नहीं हुआ तो सभी कर्मचारी अपने कार्य से अवकाश लेकर सड़कों से पानी भरेंगे। जिला चिकित्सालय और अन्य चिकित्सालयों के कर्मचारी पानी की समस्या की वजह से अवकाश पर जाएंगे। गीता, रजनी, तान्या, अमन, शीशपाल, नितिन विक्रम राणा, कामेंद्र, मुनेश, राकेश, सतीश, बद्री प्रसाद आदि ने बताया कि तीन दिनों से सड़क से बाल्टी में पानी भर रहे है।

लाज रेफर हुए व्यथित राजू का, बर्न स्पेशलिस्ट हेल्पिंग हैंड्स में ऑपरेशन हुआ संपन्न

जिला प्रशासन की टीम ने हॉस्पिटल पंहुच जाना राजू का हाल। डीएम ने हेल्पिंग हैंड चिकित्सालय व उनकी टीम का जताया आभार।

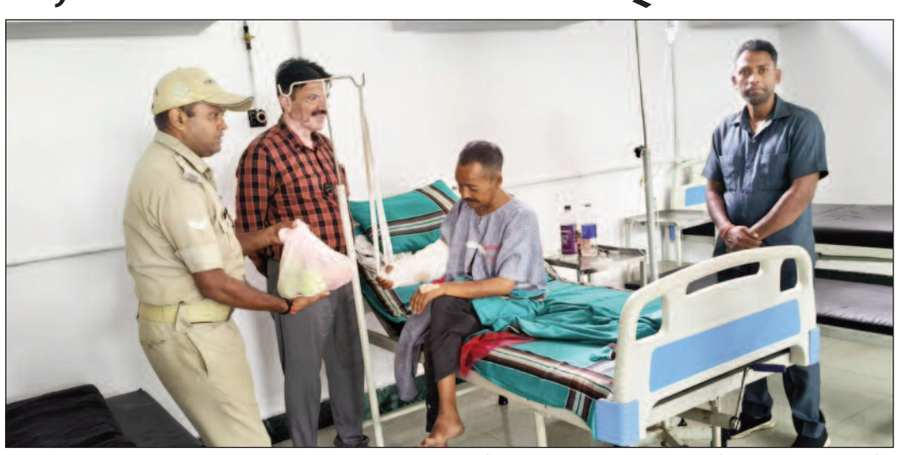

देहरादून। जिला प्रशासन के सहयोग से हेल्पिंग हेंड चिकित्सालय में असहाय व्यथित राजू का सफल आपरेशन कर लिया तथा राजू पूरी तरह से स्वस्थ है। जिलाधिकारी सविंन बसंल के निर्देश पर जिला प्रशासन की टीम प्रतिदिन राजू का हालचाल जानने चिकित्सालय जाती है तथा जिला प्रशासन की टीम चिकित्सालय के सम्पर्क में है। जिलाधिकारी ने चिकित्सालय प्रबन्धन का राजू के उपचार में सहयोग हेतु अभार व्यक्त किया। जिला प्रशासन तथा हेल्पिंग हेंड चिकित्सालय के सहयोग से राजू के उपचार चल रहा है। जिला प्रशासन राजू के पुनर्वास की भी तैयारी कर रहा है इसके लिए जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। विगत दिवस कलेक्टेज्ट परिसर में असहाय राजू पंहुचा जिसका एक हाथ बुरी तरह से जला हुआ था। राजू ने जिलाधिकारी को अपनी पीड़ा सुनाते हुए बताया कि वह होटल में मजदूरी कराता है तथा चमोली में उसका गर्म पानी से जल गया, दून अस्पताल ने हायर सेंटर को रेफर कर दिया है, उसके पास उपचार के लिए पैसे नही है। जिस पर जिलाधिकारी संविन बसंल ने बर्न स्पेशलिस्ट निजी चिकित्सालय से दूरभाष पर वार्ता करते हुए राजू के उपचार का अनुरोध किया जिस हेल्पिंग हेंड हॉस्पिटल के डॉ कुश ने राजू को तत्काल हास्पिटल भेजने को कहा। जिला प्रशासन ने सारथी वाहन से राजू को चिकित्सालय में भर्ती कराया।दरअसल असहनीय पीड़ा से छटपटाते हुए अचानक राजू नाम का एक व्यक्ति डीएम दफ्तर पहुंचा। कहा ह्यह्यसाहिब मेरा नाम राजू है। मेरे कोई भी अपना नही है, लावारिस हूँ। गढ़वाल से आया हूँ। मेरे हाथ पर गरम पानी गिरने से हाथ जल गया है। इलाज की जरूरत है। बहुत दर्द हो रहा है। अस्पताल में कोई डॉक्टर नहीं सुन रहा, बहुत परेशान हूँ, हाथ की सर्जरी होनी है। पैसा नही है, मदद करों। अपने रुंधे कंठ से ये कहते कहते राजू की आंखें दर्द के आंसुओं से छलक उठी।जिलाधिकारी सविन बंसल ने पूरी संवेदना के साथ असहाय, अनाथ राजू की मार्मिक व्यथा सुनी। राजू के अधजले हाथ के असीमित और असहनीय पीड़ा को महसूस किया और बिना वक्त जाया करते राजू के उपचार हेतु फोन पर चिकित्सकों से परामर्श किया। दून अस्पताल ने राजू के हाथ की गंभीर हालत को देखते हुए हायर सेंटर रेफर करने की सलाह दी। जिलाधिकारी ने सहस्त्रधारा आईटी पार्क स्थित एक निजी अस्पताल में स्पेशलिस्ट चिकित्सक डॉ कुश से वार्ता की और राजू को तत्काल प्रशासन के सारथी वाहन से चिकित्सक के पास पहुंचाया। जहां अब राजू के अधजले हाथ का मुफ्त इलाज हो रहा है।

जयन्त
संस्थापक
नरेन्द्र उनियाल
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और
सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
द्वारा जयन्त प्रकाशन डिग्री कॉलेज रोड़, जौनपुर कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से मुद्रित तथा जयन्त कार्यालय चन्द्रसिंह गढ़वाली मार्ग, गैरसैंण, जनपद चमोली उत्तराखण्ड से प्रकाशित
RNI No.UTTHIN/2005/16338